श्री
गूढार्थ भजन मंजरी
गोप्यार्थ सहित राश्यार्थ कूट एवं विचार मन्थन
तीन भाग
रचयिता
स्वामी रामप्रकाशाचार्य जी महाराज "वैष्णव"
उत्तम आश्रम, (आचार्य पीठ) कागा मार्ग, जोधपुर-३४२००६

श्लोक मंगलम्

वर्णानांमर्थ संधानां रसानां छन्द सामपि ।
मंगलानां च कर्तारौ वन्दे वाणी विनायकौ ।।१।।
भवानी शंकरौ वन्दे श्रद्धा विश्वास रूपिणौ ।
याभ्यां विना न पश्यन्ति सिद्धाः स्वान्तःस्थमीश्वरम् ।।२।।
वन्दे बोध मयं नित्यं गुरुं शंकर रूपिणम् ।
यमाश्रितोहि वक्रोऽपि चन्द्रः सर्वत्र वन्द्यते ।।३।।
सीता राम गुण ग्राम पुण्यारण्य विहारिणौ ।
वन्दे विशुद्ध विज्ञानौ कवीश्वर कपीश्वरौ ।।४।।
उभ्द्‌व स्थिति संहार कारिर्णीं क्लेश हारिणीम् ।
सर्व श्रेयस्करीं सीतां नतोऽहं रामवल्लभाम् ।।५।।
प्रसन्नतां या न गताभिषेक तस्तथा न मम्ले वनवास दुःखतः ।
मुखाम्बुज श्री रघुनन्दनस्य मे सदास्तु समंजुल मंगल प्रद ।।६।।
नीलाम्बुज श्यामल कोमलागं सीता समारोपित वाम भागम् ।
पाणौ महासायक चारू चापं नमामि राम रघुवंश नाथम् ।।७।।
शान्तं शाश्वतमप्रमेयमनघं निर्वाण शान्ति प्रदं ।
ब्रह्मा शम्भु फणीन्द्र सेव्यमनिशं वेदान्त वेद्यं विभुम् ।।
रामाख्यं जगदीश्वरं सुरगुरुं माया मनुष्यं हरिं ।
वन्देऽहं करूणा करं रघुवरं भूपाल चूड़ामणिम् ।।८।।
अतुलित बलधामं हेम शैलाभ देहम् ।
दनुज वन कृशानुं ज्ञानिनामग्र गण्यम् ।।
सकल गुण निधानं वानराणामधीशम् ।
रघुपति प्रिय भक्तं वात जातं नमामि ।।९।।

Scanned with Cam

श्री हरि गुरु राम सच्चिदानन्दाय नमः

श्री

गूढार्थ भजन मंजरी

तीन भाग

जिसमें

बहुत इतिहास पीढियों की विशेषता से पूर्ण आदर्श इष्ट वन्दना के
एक सौ आठ अनूठे द्रष्टिकूट दोहा छन्द टिप्पणी सहित
गोप्यार्थ सूर पथ पथिक वाटिका, राश्यार्थ काव्य
विशेषता एवं आध्यात्मिक विचार मंथन
सजाया गया है।
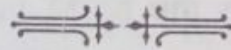
भजन मंजरी को भजे, ज्ञान द्रढ इतिहास।
भजन मंजरी से भजे, नाश इष्ट परकास ।।1।।
भजन मंजरी से भजे, जा घट "रामप्रकाश" ।
भजन मंजरी ना भजे, ता घट प्रेम विनाश ।।2।।
भजन मंजरी के रहे, सर्व सिद्धि हो खास ।
भजन मंजरी में रहे, नौ निधि "रामप्रकाश" ।।3।।
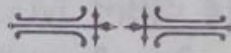
रचयिता

श्री वैष्णव रामानन्दीय अग्रद्वारस्थ सन्तदासोत जोधपुर गूदड़ गद्दी पीठाधीश्वर
ब्रह्मलीन श्री श्री १०८ श्री स्वामी उत्तमरामजी महाराज के परम शिष्य

तत्वज्ञ स्वामी रामप्रकाशजी महाराज 'अच्युत'

भारतीय समाज दर्शन, पिंगल रहस्य तथा बाल योग रत्नावली, नशा खण्डन दर्पणादि अनेक
सत्साहित्यक ग्रन्थों के लेखक एवं दर्जनाधिक्य संत वाणीरचना के सम्पादक एवं प्रकाशक

श्री महन्त - उत्तम आश्रम, कागामार्ग, जोधपुर-३४२००६

Scanned with Cam

प्रकाशक

स्वामी रामप्रकाशजी महाराज

श्री महंत - **उत्तम आश्रम (आचार्य पीठ)**

उत्तम प्रकाशन, (वैष्णव निकेतन) कागामार्ग

नागौरी द्वार के बाहर, जोधपुर-३४२००६

दूरभाष : 0291 ✆ 547024

प्रतिरोध

पुनर्प्रकाशनादि सर्वाधिकार रचयिता /प्रकाशक द्वारा स्वरक्षित

© L 9764/81

द्वितीयावृति

वि. सं. २०५७, शकाब्द १९२२, सन् २००० ई.

मूल्य

२०.०० बीस रुपये मात्र,

परिवर्द्धित संस्करण

सुविधा

अपना ऑर्डर हमेशा हिन्दी में पूरे पते सहित लिखें ऑर्डर के अनुसार पुस्तक मूल्य-डाक रजिस्ट्री सहित रकम जोड़कर अग्रिम M.O. भेजने पर पुस्तक रजिस्ट्री द्वारा भेज दी जाती है। V.P.P. भेजने की व्यवस्था नहीं है, व्यर्थ में अधिक न लिखें।

अक्षर चित्रण

पारा कंम्प्यूटर्स

हाथीराम का ओडा, जोधपुर

मुद्रक

शक्ति ऑफसेट प्रिण्टर्स

नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

सम्पादक की श्यामानन लेखनी द्वारा -
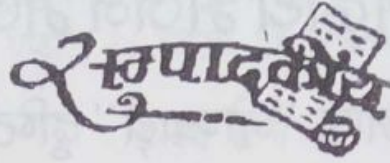
श्यामानन बाल लेखनी के ''**गूढार्थ बाल काव्य**'' प्रयास को परम विद्वान कविता प्रेमी कला भावुक सतसंगी जनों ने समादर पूर्वक अपनाया।

प्रथमावृति वि. सं. २०२६ (शकाब्द १८६१, सन् १६६८ ईस्वी) में प्रकाशित होकर समर्थ सतगुरुदेव परम पूज्य अनन्त श्री स्वामी उत्तमरामजी महाराज के कर कमलों द्वारा लोकार्पण हुआ था। निरन्तर लोक अनुशंसा से मांग बढ़ती रही किन्तु सामयिक परिस्थितियों के कारण नव प्रकाशन नहीं दे पाये।

प्रथम भाग गोप्यार्थ (४), द्वितीय भाग राश्यार्थ (२१) तथा तृतीय भाग विचार मंथन (३७) द्वारा परिवर्द्धित संस्करण गूढार्थ भजन मंजरी में हम पाठकों को अमूल्य सामग्रीं देने का साहस किया गया है।

श्री सुखराम साकेत शताब्दिी के पावन अवसर पर प्रस्तुत द्वितीय संस्करण में "बाल काव्य राश्यार्थ" गूढार्थ के साथ देकर सोने में सुगन्ध भरने का समानीकरण हुआ है। तीसरे भाग में आध्यात्मिक द्रष्टान्त सिद्धान्त तथा छुटकर विषय प्रबन्ध देकर काव्य कला का अनूठा प्रयोग किया गया है।

आशा है भ्रमवशात् रहे शब्दाऽक्षर त्रुटि पूर्ण साहित्यक कर्णापाटवादि दोषों को पाठक सुधार कर कल्याण भजन बनेंगे।

श्री जानकी सतसंग भवन — भवन्निष्ठ

सुखराम कक्ष, आचार्य विहार — **स्वामी रामप्रकाशाचार्य**

उत्तम आश्रम, जोधपुर

१० जून, २००० ई.
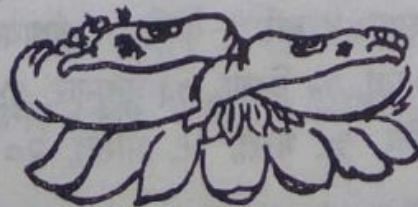
श्री गूढार्थ भजन मंजरी

प्रथम भाग "गोप्यार्थ" दृष्टिकूट

मतगयन्द छन्द (७ भगणऽ।।, दो गुरु)

आप हरी सुख रूप सदा सत, पूरण चेतन एक अपारा ।
मैं निज दास सदा पद सेवक, तार करो भव की भव धारा ।।
हूं अघ खानि महामति मूरख, ना जप नेम न जानत प्यारा ।
पार करो अब आप सनातन, "रामप्रकाश" अधार तुम्हारा ।।१।।

ज्ञान अपार विचार अखण्डित, लाग रही घट एक हि धारा ।
सार निजानन्द पूरण आतम, दूर किये भ्रम भेद विकारा ।।
सो गुरु देव सदा शुभ सामर्थ, आतमराम अभेद हमारा ।
आय न जाय न ताहि प्रणाम सु, 'रामप्रकाश' अखूट भण्डारा ।।२।।

मिलिन्दपाद सवैया छन्द

विष्णु सुत[१] पूत[२] ताहि सुत[३] वन्दन, तासुत[४] तासुत[५] तासुत[६] जानो ।
तासुत[७] पूत[८] लखो सुत[९] तासुत[१०], तासुत[११] तासुत[१२] तासुत[१३] मानो ।।
तासुत[१४] पूत[१५] महासुत[१६] तासुत[१७], वासुत[१८] जासुत[१९] तासुत[२०] गानो ।
तासुत[२१] वासुत[२२] जासुत[२३] सोसुत[२४], सोसुत[२५] तासुत[२६] जासुत[२७] दानो ।।
वासुत[२८] तासुत[२९] वासुत[३०] जासुत[३१], तासुत[३२] तासुत[३३] तासुत[३४] छानो ।
तासुत[३५] तासुत[३६] तासुत[३७] वासुत[३८], तासुत[३९] सुत[४०] सुत[४१] वन्दन तानो ।।३।।

१ ब्रह्मा, २ मरीचि, ३ कश्यप, ४ सूर्य, ५ वैवस्त, ६ इक्षावाकू, ७ कुक्षि, ८ विकुक्षि, ९ बाण, १० अनरण्य, ११ पृथु, १२ त्रिशंकु, १३ धुन्धुमार, १४ युवनाश्व, १५ मान्धाता, १६ सुसन्धि, १७ ध्रुव सन्धि, १८ भरत, १९ असित, २० हैयतालजंघ, २१ सगर,

२२ असमजंस, २३ अशुंमान, २४ दिलीप, २५ भागीरथ, २६ ककुस्थ, २७ रघु, २८ प्रवृध्द, २९ शंखण, ३० सुदर्शन, ३१ अग्निवर्ण, ३२ शीघ्रग, ३३ मरु, ३४ प्रशुश्रुक ३५ अम्बरीष, ३६ नहुष, ३७ ययाति, ३८ नाभाग, ३९ अज, ४० दशरथ, ४१ रामचन्द्र जी

इन्दव छन्द

निमि के पूत[1] सु जा सुत[2] सुतरू[3], तासुत[4] केसुत[5] औसुत[6] प्यारा ।
तासुत[7] तासुत[8] आसुत[9] वासुत[10], सोसुत[11] तासुत[12] तासुत[13] धारा ।।
तासुत[14] वासुत[15] तासुत[16] सुतरू[17], तासुत[18] तासुत[19] तासुत[20] न्यारा ।
तासुत[21] तासुत[22] तासुत[23] जानहूँ, ताहि[24] सुता पति[25] वन्द हमारा ।।४।।

१ निमि, २ मिथि, ३ जनक, ४ उदावसु, ५ नन्दवर्धन, ६ सुकेतु, ७ देवरात, ८ वृहद्रथ, ९ महावीर, १० सुधृतिमान, ११ धृष्टकेतु, १२ हर्यश्व, १३ मरू, १४ प्रतींधक, १५ कीर्तिरथ, १६ देवमीढ, १७ विबुध, १८ महीध्रक, १९ कीर्तिरात, २० महारोमा, २१ स्वर्णरोमा, २२ ह्स्वरोमा, २३ सीरध्वज, २४ सीता, २५ श्री रामचन्द्रजी महाराज ।

हरिसुत[1] केसुत[2] तासुत[3] सुत[4] जु, तासुत[5] केसुत[6] जासुत[7] जानो ।
तासुत[8] तासुत[9] तासुत[10] वासुत[11], पूत तहिं[12] सुत[13] तासुत[14] मानो ।।
तासुत[15] वासुत[16] जासुत[17] वासुत[18], पूत तहि[19] सुत[20] तासुत[21] गानो ।
तासुत[22] रक्षक[23] जाप जपो नित, "रामप्रकाश" सदा भ्रम भानो ।।५।।

१ ब्रह्मा, २ मरीचि, ३ सूर्यसभा, ४ सूर्य, ५ स्वंयभूमनु, ६ नक्षत्रपति (चन्द्र), ७ बुध्द, ८ अनुपम, ९ नहुष, १० संयत, ११ वृहस्पति, १२ भोज, १३ संतावतार, १४ भरत, १५ मंचमीठ, १६ सत्यसुत, १७ शान्तनु, १८ चित्रवीर्य, १९ पण्डू, २० अर्जुन, २१ अभिमन्यु, २२ परीक्षित, २३ श्री कृष्णचन्द्र

दोहा छन्द

दधि[1] सुत[2] भगनी[3] भ्रात[4] के, ता भ्राता[5] जिन भाल ।
ता पत्नि[6] सुत[7] को नमो, "रामप्रकाश" दे माल ।।१।।

१ समुद्र, २ मोती, ३ लक्ष्मी, ४ शंख, ५ चन्द्र, ६ पार्वती, ७ गणेश ।

Scanned with Cam

दधि[1] सुता[2] पति[3] नाभि ता, कंज[4] सुत[5] सुत[6] सुत[7] जान ।
ताके सुत[8] सुत[9] वैरि[10] को, "राघवप्रसाद" उर आन ।।२।।

१ समुद्र, २ लक्ष्मी, ३ विष्णु, ४ कमल, ५ ब्रह्मा, ६ कश्यप, ७ पुलस्त, ८ विश्रवा, ९ रावण, १० रामचन्द्र ।

सिन्धु[1] सुत[2] भ्राता[3] लखो, ता भ्राता[4] के तात ।
ताहि सुता[5] पति[6] को नमो, "रामप्रकाश" दरशात ।।३।।

१ समुद्र, २ एरावत, ३ शंख, ४ मोती, ५ लक्ष्मी ६ विष्णु ।

हिम[1] सुता[2] पति[3] को नमो, ता सुत[4] को प्रणाम ।
सिंधु[5] सुता[6] पति[7] को नमो, "रामप्रकाश" विराम ।।४।।

१ हिमालय, २ पार्वती, ३ शिव, ४ गणेश, ५ समुद्र, ६ लक्ष्मी, ७ विष्णु ।

हरि[1] पत्नि[2] के तात[3] सुत[4], ता धारक[5] शिरधार ।
ताको ताके सुत[6] सहित, "रामप्रकाश" उर धार ।।५।।

१ विष्णु, २ लक्ष्मी, ३ समुद्र, ४ चन्द्र, ५ शिव, ६ गणेश ।

भैरव वाहन[1] के भक्ष[2] को, ता भक्ष[3] स्वामी[4] जाय ।
तात[5] मात पद युगल के, शीश नमाऊँ गाय ।।६।।

१ कुत्ता, २ बिल्ला, ३ मूषक, ४ गणेश, ५ शिव-पार्वती ।

मघवा[1] पत्नि[2] तात[3] सुत[4], ता भगनी[5] पति[6] जान ।
"रामप्रकाश" कर जोर के, नमस्कार ता मान ।।७।।

१ इन्द्र, २ रंभा, ३ समुद्र, ४ धन्वन्तरी, ५ लक्ष्मी, ६ विष्णु ।

कृष्ण मित्र[1] के भ्रात[2] को, तात[3] तात[4] के तात[5] ।
सुता[6] पति[7] अरि[8] धर[9] धरे, नमस्कार विख्यात ।।८ ।।

१ अर्जुन, २ कर्ण, ३ सूर्य, ४ कश्यप, ५ ब्रह्मा, ६ अहिल्या, ७ गौतम, ८ चन्द्र, ९ शिव

रचयिता का उपनाम राघवप्रसाद है ।

गौतम पत्नि[१] तात[२] के, सुत[३] सुत[४] ता सुत[५] जान ।
ता भ्राता[६] के मित्र[७] को, "रामप्रकाश" उर आन ।।६।।

१ अहिल्या, २ ब्रह्मा, ३ कश्यप, ४ सूर्य, ५ कर्ण, ६ अर्जुन, ७ कृष्ण ।

दधि[१] सुता[२] भगनि[३] तहिं, ता भरता[४] उर लाय ।
"रामप्रकाश" कर जोड़ के, हरदम ध्यान लगाय ।।१०।।

१ समुद्र, २ रंभा, ३ लक्ष्मी, ४ विष्णु ।

रघु सुत[१] सुत[२] ता पुत्र[३] का, सुत[४] भ्राता[५] संग लाय ।
"रामप्रकाश" नित ही नमो, वार वार मुख गाय ।।११।।

१ दिलीप, २ अज, ३ दशरथ, ४ राम, ५ लक्ष्मण ।

शशि[१] तात[२] अरि[३] जो जपे, ताको मैं उर लाय ।
जलधि[४] सुता[५] पति[६] ध्याय के "रामप्रकाश" मनाय ।।१२।।

१ चन्द्र, २ समुद्र, ३ अगस्त, ४ समुद्र, ५ लक्ष्मी, ६ विष्णु ।

अम्बुधि[१] सुता[२] पति[३] को लखो, ता सुत[४] बन्धु[५] जान ।
ता अरि को उर आन के, "रामप्रकाश" बखान ।।१३।।

१ समुद्र, २ रंभा, ३ इन्द्र, ४ अर्जुन, ५ कौरव, ६ श्री कृष्ण ।

अज[१] सुत[२] सुत[३] ता पूत[४] को, इष्ट[५] पुत्र[६] युत जान ।
"रामप्रकाश" निशि दिन जपो, ताते हो कल्यान ।।१४।।

१ ब्रह्मा, २ पुलस्त, ३ विश्रवा, ४ रावण, ५ शिव, ६ गणेश ।

अवनि[१] सुत[२] अरि[३] को नमो, अवनि[१] सुता[४] पति[३] जान ।
"रामप्रकाश" जो जा रटे, अवश्य होय कल्यान ।।१५।।

१ पृथ्वी, २ भौमासुर, ३ कृष्ण, ४ सत्यभामा ।

सैल[१] सुता[२] पति[३] भाल[४] में, तात[५] सुता[६] पति[७] जोय ।
"रामप्रकाश" वन्दन करे, ताते मुक्ति होय ।।१६।।

१ हिमालय, २ पार्वती, ३ शिव, ४ चन्द्र, ५ समुद्र, ६ लक्ष्मी, ७ विष्णु ।

Scanned with Cam

अज[१] सुत[२] सुत[३] के वंश में, जनक सुता[४] पति[५] जान ।
"रामप्रकाश" वन्दन करे, होय तुरन्त कल्यान ।।१७।।
१ ब्रह्मा, २ कश्यप, ३ सूर्य, ४ सीता, ५ रामचन्द्र

दधि[१] सुत[२] भगनि[३] के पति[४], ता पद धोवन[५] धार[६] ।
तात[७] पत्नि[८] सुत सहित कर, "रामप्रकाश" उचार ।।१८।।
१ समुद्र, २ शंख, ३ लक्ष्मी, ४ विष्णु, ५ गंगा, ६ शिव, ७ गौरी, ८ गणेश ।

सैल[१] सुता[२] वर[३] तिलक[४] का, वाहन[५] भक्ष[६] ता मात[७] ।
ता वर[८] पत्नि[९] के पिता[१०], सुता[११] पति[१२] विख्यात ।।१९।।
१ हिमालय, २ पार्वती, ३ शिव, ४ चन्द्र, ५ हरिण, ६ घास, ७ पृथ्वी, ८ इन्द्र, ९ रंभा, १० समुद्र, ११ लक्ष्मी, १२ विष्णु ।

कंज[१] सुत[२] सुत[३] ता भगनि[४] को, वर[५] अरि[६] ताके तात[७] ।
सुता[८] पति[९] पद वन्दना, "रामप्रकाश" दरशात ।।२०।।
१ कमल, २ ब्रह्मा, ३ कश्यप, ४ अहिल्या, ५ गौतम, ६ चन्द्र, ७ समुद्र, ८ लक्ष्मी, ९ विष्णु ।

पदम[१], पूत[२] ताकी सुता[३], वर[४] अरि[५] वाहन[६] जान ।
ता भख[७] माता[८] के पति[९], वाहन[१०] भगनि[११] वर[१२] मान ।।२१।।
१ कमल, २ ब्रह्मा, ३ अहिल्या, ४ गोतम, ५ चन्द्र, ६ मृग, ७ घास, ८ पृथ्वी, ९ इन्द्र, १० एरावत, ११ लक्ष्मी, १२ विष्णु ।

पण्डु सुत[१] सुत[२] पत्नि[३] लख, ता सुत[४] रक्षक जोय ।
"रामप्रकाश" जो जन रटे, सहजे मुक्ति होय ।।२२।।
१ अर्जुन, २ अभिमन्यु, ३ उत्तरा, ४ परीक्षित, ५ श्री कृष्ण ।

दधि[१] सुता[२] पति[३] को लखो, ता भूषण[४] के तात[१] ।
ताहि सुता[५] पति[६] पूत[७] के, मित्र[८] जपो दिन रात ।।२३।।
१ समुद्र, २ लक्ष्मी, ३ विष्णु, ४ कौस्तुभमणि, ५ रंभा, ६ इन्द्र, ७ अर्जुन, ८ श्रीकृष्ण ।

Scanned with Cam

पदम[1] पूत[2] सुत[3] पुत्र[4] को, सुत[5] भ्राता[6] अरि[7] जान ।
ता अरि[8] ध्यावो प्रेम से, "रामप्रकाश" पहिचान ।।२४।।

१ कमल, २ ब्रह्मा, ३ कश्यप, ४ सूर्य, ५ कर्ण, ६ अर्जुन, ७ दुर्योधन, ८ कृष्णचन्द्र ।

दधि[1] सुता[2] वर[3] पूत[4] को, मित्र[5] जान सुखदान ।
"रामप्रकाश" ता भजन कर, जीवन हो कल्यान ।।२५।।

१ समुद्र, २ रंभा, ३ इन्द्र, ४ अर्जुन, ५ श्रीकृष्ण ।

कश्यप पत्नि[1] तासु सुत[2], ता दाता[3] सुत[4] जान ।
ता सुता[5] पति[6] तात[7] को, ताहि तात[8] भज ध्यान ।।२६।।

१ दिति, २ वामनावतार, ३ बलि, ४ बाणासुर, ५ ऊषा, ६ अनिरुद्ध, ७ प्रद्युम्न, ८ श्रीकृष्ण ।

हिरण्यकश्यप सुत[1] पूत[2] ता, सुत[3] सुत[4] सुता[5] सुजान ।
ताहि पति[6] ता तात[7] के, तात[8] भजे कल्यान ।।२७।।

१ प्रहलाद, २ वीरोचन ३ बलि, ४ बाणासुर, ५ ऊषा, ६ अनिरुद्ध, ७ प्रद्युम्न, ८ श्रीकृष्ण

सिंधु सुत[1] सुत[2] तासु सुत[3], ता सुत[4] सुत[5] सुत[6] जान ।
तासु पूत[7] जननि[8] तहिं, ता सुत[9] मित्र[10] बखान ।।२८।।

१ जल, २ कीच, ३ कमल, ४ ब्रह्मा, ५ कश्यप, ६ सूर्य, ७ कर्ण, ८ कुन्ती, ९ पाण्डव, १० श्रीकृष्ण ।

यमदग्नि ता पत्नि[1] की, भगनी[2] पति[3] रिपु[4] तास ।
ता गर्व-हरि[5] भ्रात[6] युत, नमो सु "रामप्रकाश" ।।२९।।

१ रेणुका, २ माधुरी, ३ सहस्रार्जुन, ४ परसराम, ५ राम, ६ लक्ष्मण ।

वारिध[1] सुत[2] सुत[3] ता सुता[4], पति[5] अरि[6] वाहन[7] जान ।
ता भख[8] जननी[9] के पति[10], पत्नि[11] भगनी[12] वर[13] मान ।।३०।।

१ समुद्र, २ कमल, ३ ब्रह्मा, ४ अहल्या, ५ गोतम, ६ चन्द्र, ७ मृग, ८ घास, ९ पृथ्वी, १० इन्द्र, ११ रंभा, १२ लक्ष्मी, ३ श्री विष्णु ।

Scanned with Cam

शचिपति[१] वाहन[२] तात[३] ता, सुता[४] सखि[५] ता जान ।
ता सखि[६] ताके पति[७] युत, नमस्कार पहिचान ।।३१।।

१ इन्द्र, २ एरावत, समुद्र, ४ लक्ष्मी, ५ सावत्री, ६ पार्वती, ७ शिव ।

हेम[१] सुता[२] पति[३] तिलक[४] ता, तात[५] पूत[६] ता पूत[७] ।
ता कन्या[८] गति दान[९] दे, नमो ताहि अवधूत ।।३२।।

१ हिमालय, २ पार्वती, ३ शिव, ४ चन्द्रमा, ५ सागर, ६ कमल, ७ ब्रह्मा, ८ अहिल्या, ९ रामचन्द्र ।

सिंधु सुत[१] सुत[२] पूत ता[३], सुत[४] सुत[५] ता सुत[६] जान ।
ताके वंशज में भये[७], जपत होय कल्यान ।।३३।।

१ जल, २ कीचड़, ३ कमल, ४ ब्रह्मा, ५ कश्यप, ६ सूर्य, ७ रामजी ।

दधि सुत[१] भ्राता[२] भ्रात[३] को, ता भ्राता[४] शिर[५] धार ।
कुटुम्ब सहित ता वन्दना, ताकर हो निस्तार ।।३४।।

१ मोती, २ ऐरावत, ३ शंख, ४ चन्द्र, ५ शिव ।

दधि सुता[१] पति[२] को नमो, सेल[३] सुता[४] वर[५] देव ।
ता स्मरण ते अघ मिटे, विरला जाने भेव ।।३५।।

१ लक्ष्मी, २ विष्णु, ३ हिमालय, ४ पार्वती, ५ शिव ।

उग्रसेन सुत[१] भगनि[२] ता, पति[३] सुत[४] जानो श्याम ।
स्मरण कर मन ध्यान दे, "रामप्रकाश" आराम ।।३६।।

१ कंश, २ देवकी, ३ वसुदेव, ४ श्रीकृष्णचन्द्रजी ।

दधि सुत[१] सुत[२] पितु[३] ताहि सुत[४], ता धर[५] भूषण[६] ताय ।
ताहि भ्रात[७] की सैज पर, पोढत सुख कर ध्याय ।।३७।।

१ जल, २ कमल, ३ समुद्र, ४ चन्द्र, ५ शिव, ६ सर्प, ७ शेष शय्या ।

रति पति[१] अरि[२] को नमो, हरत शोक भ्रम ताप ।
"रामप्रकाश" चित लाय के, जपत उन्हीं का जाप ।।३८।।

Scanned with Cam

१ कामदेव, २ शंकर ।

हेम[१] सुता[२] पति[३] पूत[४] ता, वाहन[५] भक्ष[६] ता जान ।
ता भ्राता[७] तलपा[८] सजे, ता वन्दन सुख खान ।।३९।।

१ हिमालय, २ पार्वती, ३ शंकर, ४ कार्तिक, ५ मोर, ६ सर्प, ७ शेष ८ शय्या जिसकी ।

गणपति तात[१] पत्नि[२] तिन्ही, तात[३] भ्रात[४] को झेल ।
सिन्धु[५] सुता[६] पति[७] मदहर्‌यो, ताहि हृदय मेल ।।४०।।

१ शिव, २ पार्वती, ३ हिमालय, ४ गोवर्धन, ५ समुद्र, ६ रंभा, ७ इन्द्र ।

सुरपति[१] पत्नि[२] भ्रात[३] की, तात[४] सुता[५] पहिचान ।
ताहि पति[६] पद पद्म में, निशदिन रखिये ध्यान ।।४१।।

१ इन्द्र, २ रंभा, ३ चन्द्र, ४ समुद्र, ५ लक्ष्मी, ६ विष्णु ।

सुरपति[१] वाहन[२] को लखो, ता भगनी[३] के भ्रात[४] ।
ता भ्राता[५] भगनी[६] पति[७], "रामप्रकाश" विख्यात ।।४२।।

१ इन्द्र, २ ऐरावत, ३ रंभा, ४ मोती, ५ चन्द्र, ६ लक्ष्मी, ७ विष्णु ।

शंकर तनय[१] के तात[२] को, पति[३] पत्नि[४] को जान ।
ता भगनि[५] के पति[६] लखो, तुरन्त पाय कल्यान ।।४३।।

१ हनुमान, २ वायु, ३ इन्द्र, ४ रंभा, ५ लक्ष्मी, ६ विष्णु ।

राहू ग्राह्य[१] ताके रिपु[२], दुःखपायक[३] पति[४] जाण ।
तात[५] तात[६] को नित जपो, जीवन होय कल्याण ।।४४।।

१ सूर्य, २ रात्रि, ३ चकवा-चकवी, ४ अनिरूद्ध, ५ प्रद्युम्न, ६ श्रीकृष्ण ।

कृष्ण पौत्र[१] वाहन[२] अरि[३], ता अरि जन[४] के तात[५] ।
ताके सुत[६] सुत[७] पूत[८] ता, अरि[९] जान विख्यात ।।४५।।

१ अनिरुद्ध, २ चकवा, ३ रात्रि, ४ सूर्य, ५ कश्यप, ६ पुलस्त, ७ विश्रवा, ८ रावण, ९ श्रीराम ।

Scanned with Cam

कृष्ण मित्र[१] बन्धु[२] लखो, तात[३] सुवन[४] को जान ।
ताके पूर्ण[५] इष्ट को, जपत होय कल्यान ।।४६।।

१ अर्जुन, २ भीम, ३ वायु, ४ हनुमान, ५ श्रीराम ।

कृष्ण बन्धु[१] ता भ्रात[२] जो, पिता[३] जात[४] सुत जान ।
वरद[५] ताहि पत्नि[६] पिता[७], ता कन्या[८] पति[९] जान ।।४७।।

१ अर्जुन, २ भीम, ३ वायु, ४ हनुमान, ५ इन्द्र, ६ रंभा, ७ समुद्र, ८ लक्ष्मी, ९ श्रीविष्णु

शाखामृग[१] के तात[२] को, वाहन[३] ता बन्धु[४] जान ।
ता भगनी[५] के श्याम[६] को, नमस्कार पहिचान ।।४८।।

१ हनुमान, २ इन्द्र, ३ ऐरावत, ४ चन्द्र, ५ लक्ष्मी, ६ विष्णु ।

मघवा[१] वाहन[२] तात[३] के, सुत[४] भगनि[५] ता मान ।
ता बन्धु[६] धारक[७] लखो, जपते होय कल्यान ।।४९।।

१ इन्द्र, २ एरावत, ३ समुद्र, ४ कल्पवृक्ष, ५ लक्ष्मी, ६ चन्द्र, ७ शिव ।

सिंधु[१] सुत[२] सुत[३] ता सुता[४], भ्रात[५] भ्रात[६] के भ्रात[७] ।
ताके शिष्य[८] के पूत[९] को, जान सदा विख्यात ।।५०।।

१ समुद्र, २ कमल, ३ ब्रह्मा, ४ अहिल्या, ५ कश्यप, ६ मनु, ७ वशिष्ठ, ८ दशरथ, ९ श्रीराम ।

दधि सुत[१] भगनी[२] भ्रात[३] ता, भ्रात[४] भगनि[५] भरतार[६] ।
ता वाहन[७] भगनी[८] पति[९], जपत होय निस्तार ।।५१।।

१ चन्द्र, २ कामधेनु, ३ शंख, ४ चन्द्र, ५ रंभा, ६ इन्द्र, ७ ऐरावत, ८ लक्ष्मी, ९ विष्णु ।

मुक्ता भगनी[१] तात[२] के, सुत[३] भ्राता[४] के भ्रात[५] ।
ता भ्राता[६] भगनी[७] पति[८], इष्ट रखो सुखदात ।।५२।।

१ कामधेनु, २ समुद्र, ३ शंख, ४ ऐरावत, ५ कल्पवृक्ष, ६ उच्चैश्रवा, ७ लक्ष्मी, ८ विष्णु

कंज[१] सुत[२] सुत[३] ता पुत्र[४] के, वाहन[५] ताके भ्रात[६] ।
ता भगनी[७] भगनी[८] पति[९], ताको जप दिन रात ।।५३।।

Scanned with Cam

१ कमल, २ ब्रह्मा, ३ कश्यप, ४ सूर्य, ५ उच्चैश्रवा, ६ ऐरावत, ७ रंभा, ८ लक्ष्मी, ९ विष्णु ।

कृष्ण सुत[१] सुत[२] पत्नि[३] को, तात[४] इष्ट[५] को जान ।
ता पत्नि[६] सुत[७] भ्रात[८] को, प्रथम जपे कल्यान ।।५४।।

१ प्रद्युम्न, २ अनिरुद्ध, ३ ऊषा, ४ बाणासुर, ५ शिव, ६ पार्वती, ७ कार्तिक, ८ गणेश ।

वसुदेव सुत[१] तासु सुत[२], ता सुत[३] पत्नि[४] तात[५] ।
इष्ट[६] वाहन[७] रिपु[८] स्वामी[९] के, पूत[१०] सदा कुशलात ।।५५।।

१ कृष्ण, २ प्रद्युम्न, ३ अनिरुद्ध, ४ ऊषा, ५ बाणासुर, ६ शिव, ७ बैल (नदी), ८ सिंह, ९ गौरी, १० गणपति ।

कंस भगनि[१] पति[२] पूत[३] को, ता सुत[४] सुत[५] को जान ।
पत्नि[६] पिता[७] ता तात[८] के, तात[९] तात[१०] इष्ट[११] गान ।।५६।।

१ देवकी, २ वसुदेव, ३ कृष्ण, ४ प्रद्युम्न, ५ अनिरुद्ध, ६ ऊषा, ७ बाणासुर, ८ बलि, ९ वीरोचन, १० प्रहलाद, ११ नृसिंह ।

लव पितु[१] पितु[२] ता तात[३] को, तात[४] तात[५] को जान ।
महाबली यश धाम सो, ता सम को है आन ।।५७।।

१ राम, २ दशरथ, ३ अज, ४ दिलीप, ५ रघु ।

रघु सुत[१] सुत[२] ता पूत[३] के, पूत[४] भ्रात[५] ता भ्रात[६] ।
ताके भ्राता[७] इष्ट मम, "रामप्रकाश" नित ध्यात ।।५८।।

१ दिलीप, २ अज, ३ दशरथ, ४ शत्रुघन, ५ लक्ष्मण, ६ भरत, ७ रामचन्द्र ।

कैकय[१] सुता[२] पति[३] पूत[४] ता, पत्नि[५] तात[६] को मान ।
ताहि सुता[७] पति[८] को जपो, "रामप्रकाश" कल्यान ।।५९।।

१ राजा, २ कैकेयी, ३ दशरथ, ४ लक्ष्मण, ५ उर्मिला, ६ जनक, ७ सीता, ८ श्रीराम ।

मीन[१] केतु अरि[२] भाल[३] में, तात[४] पुत्र[५] ता भ्रात[६] ।
ता भगनी[७] भगनी[८] पति[९], सो ध्यावो दिन रात ।।६०।।

१ कामदेव, २ शिव, ३ चन्द्र, ४ समुद्र, ५ शंख, ६ ऐरावत, ७ रंभा, ८ लक्ष्मी, ९ विष्णु

मीनकेतु[१] अरि[२] तिलक[३] ता, तात[४] सुता[५] को जान ।
ता भगनी[६] भगनी[७] पति[८], "रामप्रकाश" कर ध्यान ।।६१।।

१ कामदेव, २ शिव, ३ चन्द्र, ४ समुद्र, ५ कामधेनु, ६ रंभा, ७ लक्ष्मी, ८ विष्णु ।

शनि तात[१] ता तात[२] जो, तात[३] तात[४] ता तात[५] ।
ताके सूत[६] ता भ्रात[७] के, भ्रात[८] तिलक[९] धर ख्यात ।।६२।।

१ रवि, २ कश्यप, ३ ब्रह्मा, ४ फूल, ५ समुद्र, ६ कल्पवृक्ष, ७ उच्चैश्रवा, ८ चन्द, ९ शिव

सुरपति[१] पत्नि[२] तात[३] सुत[४], ता रिपु[५] पूत[६] समेत ।
"रामप्रकाश" जपते कटे, अघ भ्रम मूलक हेत ।।६३।।

१ इन्द्र, २ रंभा, ३ समुद्र, ४ विष (हलाहल), ५ शिव, ६ गणेश ।

दधि सुता[१] पति[२] सुवन[३] के, इष्ट[४] दलन दुःख रोग ।
ताते भज कल्याण हित, "रामप्रकाश" तज भोग ।।६४।।

१ रंभा, २ इन्द्र, ३ हनुमान, ४ रामचन्द्र ।

वारिध[१] सुत[२] सुत[३] पूत[४] ता, सुत[५] सुत[६] ता सुत[७] जान ।
ताके सुत[८] के बंधु[९] मिंत[१०], इष्ट[११] सदा सुख खान ।।६५।।

१ समुद्र, २ मोती, ३ कमल, ४ ब्रह्मा, ५ कश्यप, ६ पुलस्त, ७ विश्रवा, ८ रावण, ९ विभीषण, १० हनुमान, ११ राम ।

नीरनिधि[१] सुत[२] ताहि सुत[३], सुता[४] पति[५] अरि[६] जोय ।
ताके बन्धु[७] को धरे[८], नमो तिंहि नित होय ।।६६।।

१ समुद्र, २ कमल, ३ ब्रह्मा, ४ अहिल्या, ५ गौतम, ६ चन्द्र, ७ शंख, ८ विष्णु ।

जलनिधि[१] पुत्री[२] भगनी[३] ता, पति[४] पत्नि[५] को जान ।
ताहि सुता[६] पति[७] को जपो, "रामप्रकाश" उर आन ।।६७।।

१ समुद्र, २ कामधेनु, ३ रंभा, ४ इन्द्र, ५ पृथ्वी, ६ सत्यभामा, ७ श्रीकृष्ण ।

Scanned with Cam

अजा[१] सखि[२] रिपु[३] मात[४] ता, पति[५] पत्नि[६] के भ्रात[७] ।
ता भ्राता[८] के तात[९] सुत[१०], भगनी[११] वर[१२] मन भ्रात ।।६८।।

१ बकरी, २ भेड़, ३ भुर्ट (कांटा), ४ पृथ्वी, ५ इन्द्र, ६ रंभा, ७ शंख, ८ कल्पवृक्ष, ९ समुद्र, १० ऐरावत, ११ लक्ष्मी, १२ विष्णु ।

परसुराम पितु[१] पत्नि[२] ता, ता भगनी[३] पति[४] जाण ।
ताके सुत[५] के इष्ट[६] को, जपत होय कल्याण ।।६९।।

१ यमदग्नि, २ रेणुका, ३ क्याधु, ४ हिरण्यकश्यप, ५ प्रहलाद, ६ नृसिंह भगवान ।

अज[१] सुत[२] सुत[३] ता पूत[४] जो, ता सुत[५] इष्ट[६] पिछान ।
"रामप्रकाश" कर वन्दना, होय भ्रम तम हान ।।७०।।

१ ब्रह्मा, २ कश्यप, ३ पुलस्त, ४ विश्रवा, ५ रावण, ६ शिव ।

विप्र[१] गुरु[२] के शिष्य[३] की पत्नि[४] भ्रात[५] की मात[६] ।
पति[७] पत्नि[८] ता भगनि[९] वर[१०], विश्वेश्वर जप गात ।।७१।।

१ सुदामा, २ सांदीपन ऋषि, ३ कृष्ण, ४ सत्यभामा, ५ भौमासुर, ६ पृथ्वी, ७ इन्द्र, ८ रंभा, ९ लक्ष्मी, १० विष्णु ।

अज[१] सुत[२] सुत[३] ने जा हन्यो[४], ताके सुत[५] रिपु[६] जान ।
अज[१] पोता[३] ने जा कह्यो, तुम सम नाही आन ।।७२।।

१ अज राजा, २ दशरथ, ३ राम, ४ रावण, ५ अहिरावण, ६ हनुमान ।

अज[१] सुत[२] सुत[३] ता पूत[४] को, पूत[५] पुत्र[६] के द्वार ।
ता सेवक[७] के तात[८] को, स्वामी[९] भज निस्तार ।।७३।।

१ ब्रह्मा, २ कश्यप, ३ पुलस्त, ४ विश्रवा, ५ रावण, ६ अहिरावण, ७ मकरध्वज, ८ हनुमान, ९ राम ।

दधि[१] सुत[२] सुत[३] ता पूत[४] जो, ता सुत[५] ता सुत[६] जान ।
ताके सुत[७] सुत[८] पूत[९] के, रिपु[१०] इष्ट[११] जप ज्ञान ।।७४।।

१ समुद्र, २ शंख, ३ कमल, ४ ब्रह्मा, ५ कश्यप, ६ पुलस्त, ७ विश्रवा, ८ रावण,

Scanned with Cam

९ मेघनाद, १० लक्ष्मण, ११ श्रीराम ।

भरत पुत्र[१] सुत[२] तास सुत[३], ता सुत[४] ता सुत[५] जान ।
ता सुत[६] ता सुत[७] वंश में, वंशज[८] सुत[१०] सुत[११] मान ।।७५।।

१ सगर, २ असमंजस, ३ अंशुमान, ४ दिलीप, ५ भागीरथ, ६ ककुत्स्थ, ७ रघु, ८ अज, ९ दशरथ, १० श्रीराम ।

दधि[१] सुता[२] पति[३] जान ले, वाहन[४] भूषण[५] लाय ।
ता रक्षित[६] के इष्ट[७] को, जप मन मुक्त समाय ।।७६।।

१ समुद्र, २ रंभा, ३ इन्द्र, ४ ऐरावत, ५ घण्टा, ६ टिटहरी के बच्चे, ७ राम ।

राम दूत[१] के तात[२] सुत[३], ता भ्राता[४] के भ्रात[५] ।
ता पत्नि[६] के इष्ट[७] को, जपो सदा दिन रात ।।७७।।

१ हनुमान, २ वायु, ३ भीमसेन, ४ धर्मराज (युधिष्ठिर), ५ अर्जुन, ६ द्रोपदी, ७ कृष्ण ।

कश्यप पत्नि[१] पूत[२] ता, ता दाता[३] सुत[४] पूत[५] ।
ताके रक्षक[६] को नमो, सदा करे अवधूत[७] ।।७८।।

१ दिति, २ वामन, ३ बलि, ४ वीरोचन, ५ प्रहलाद, ६ नृसिंह, ७ रचयिता ।

नृसिंह भक्त[१] के तात[२] के, तात[३] याचक[४] के तात[५] ।
तात[६] तात[७] के तात[८] की, सुता[९] वर[१०] जप दिन रात ।।७९।।

१ प्रहलाद, २ वीरोचन, ३ बलि, ४ वामन, ५ कश्यप, ६ ब्रह्मा, ७ कमल, ८ समुद्र, ९ लक्ष्मी, १० श्री विष्णु ।

नारांतक के भ्रात[१] को, भ्रात[२] तात[३] के भ्रात[४] ।
ता अरि[५] को निशि दिन रटो, होय परम कुशलात ।।८०।।

१ मेघनाद, २ अहिरावण, ३ रावण, ४ कुभंकरण, ५ रामजी ।

रावण सुत[१] के भ्रात[२] को, भ्रात[३] अरि[४] के भ्रात[५] ।
ता सेवक[६] के चरण युग, वन्दों दिन अरु रात ।।८१।।

१ अहिरावण, २ नारांतक, ३ मेघनाद, ४ लक्ष्मण, ५ श्रीराम, ६ हनुमान ।

अहिरावण के तात[१] सो, भ्रात[२] भ्रात[३] को जान ।
ताहि इष्ट[४] मम इष्ट सो, "रामप्रकाश" पहिचान ।।८२।।

१ रावण, २ कुम्भकरण, ३ विभीषण, ४ रामचन्द्र ।

गणपति वाहन[१] तासु रिपु[२], ता रिपु[३] स्वामी[४] मात[५] ।
ता वाहन[६] के दास[७] को, स्वामी[८] जप प्रभात ।।८३।।

१ मूषक, २ साँप, ३ मयूर, ४ कार्तिक, ५ पार्वती, ६ सिंह, ७ वृषभ, ८ शंकर ।

दधि सुता[१] पति[२] पत्नि[३] ता, डसण[४] अरि[५] रिपु[६] नार[७] ।
तात[८] तात[९] के तात[१०] जो, सुता[११] पति[१२] कर प्यार ।।८४।।

१ रंभा, २ इन्द्र, ३ पृथ्वी, ४ चींचड़ (खटमल), ५ मुर्गा, ६ गौतम, ७ अहिल्या, ८ ब्रह्मा, ९ कमल, १० समुद्र, ११ लक्ष्मी, १२ विष्णु ।

जनक सुता[१] भगनी[२] लखो, तात[३] सुता[४] पहिचान ।
ता भगनी[५] के श्याम[६] को, "रामप्रकाश" सत जान ।।८५।।

१ माण्डवी, २ श्रुतिकीर्ति, ३ सीरध्वज, ४ उर्मिला, ५ सीता, ६ श्री राम ।

राम दास[१] पति[२] भ्रात[३] की, पत्नि[४] सुत[५] के भ्रात[६] ।
गुरु[७] ताहि के इष्ट[८] को, नमो सदा दिनरात ।।८६।।

१ हनुमान, २ सुग्रीव, ३ बालि, ४ तारा, ५ अंगद, ६ दधिबल, ७ नारद, ८ विष्णु ।

सरमा पति[१] के भ्रात[२] जो, ता बलि[३] भ्राता[४] मिंत[५] ।
"रामप्रकाश" जग छोड़ के, ताकी करिये चिंत ।।८७।।

१ विभीषण, २ रावण, ३ बालि, ४ सुग्रीव, ५ श्री राम ।

यमुना भ्राता[१] तात[२] के, तात[३] तात[४] के तात[५] ।
ताहि पिता[६] सुत[७] भगनि[८] के, पति[९] भजो दिनरात ।।८८।।

१ धर्मराज, २ सूर्य, ३ कश्यप, ४ ब्रह्मा, ५ कमल, ६ समुद्र, ७ शंख, ८ लक्ष्मी, ९ विष्णु ।

धर्म भगनी[१] के तात[२] के, शिष्य[३] इष्ट[४] वर जान ।
"रामप्रकाश" ते मुक्त हो, जो जन जपे अमान ।।८६।।

१ यमुना, २ सूर्य, ३ हनुमान, ४ श्री राम ।

जनमेंजय के तात[१] सो, तात[२] तात[३] के भ्रात[४] ।
ता भ्राता[५] के इष्ट[६] सो, "रामप्रकाश" लख गात ।।६०।।

१ परीक्षित, २ अभिमन्यु, ३ अर्जुन, ४ भीम, ५ युधिष्ठर, ६ श्री कृष्ण ।

पारासर सुत[१] पूत[२] जो, ता शिष्य[३] ताके तात[४] ।
ता पितु[५] पत्नि[६] इष्ट[७] ता, "रामप्रकाश" दरशात ।।६१।।

१ वेद व्यास, २ शुकदेव, ३ परीक्षित, ४ अभिमन्यु, ५ अर्जुन, ६ द्रोपदी, ७ श्री कृष्ण ।

रघु तात[१] पितु[२] योग ते, तात[३] तात[४] ता तात[५] ।
ताहि तात[६] सुत[७] मुक्ति हित, हरि पद[८] धोवन ध्यात ।।६२।।

१ ककुस्थ, २ भागीरथ, ३ दिलीप, ४ अंशुमान, ५ असमंजस, ६ सगर, ७ साठ हजार पुत्र, ८ गंगा ।

श्री कृष्ण सुत[१] पूत[२] ता, तिन पत्नि[३] के तात[४] ।
ताहि इष्ट[५] को ध्यान कर, यम फांसी कट जात ।।६३।।

१ प्रद्युम्न, २ अनिरुद्ध, ३ ऊषा, ४ बाणासुर, ५ शिव ।

शिव वाहन[१] के सखा[२] लख, ता स्वामी[३] के तात[४] ।
ताहि तात[५] के तात[६] पितु[७], तात[८] सुता[९] वर[१०] ध्यात ।।६४।।

१ नन्दी, २ भैंसा, ३ शनिदेव, ४ सूर्य, ५ कश्यप, ६ ब्रह्मा, ७ कमल, ८ समुद्र, ९ लक्ष्मी, १० विष्णु ।

उत्तम तात[१] सुत[२] ता गुरु[३], ता गुरुजी[४] के तात[५] ।
ता दादा[६] जाया[७] पती[८], जपे कष्ट कट जात ।।६५।।

१ उतानपाद, २ ध्रुव, ३ नारद, ४ सन्तकुमार, ५ ब्रह्मा, ६ समुद्र, ७ लक्ष्मी, ८ विष्णु ।

दधि[1] सुता[2] पति[3] जो मिले, तो आवे सुख चैन ।
नातर नक्षत्र[4] वेद[5] ग्रह[6], अर्ध[7] खाय तब बैन ।।९६।।

१ समुन्द्र, २ लक्ष्मी, ३ विष्णु, ४ सताईस, ५ चार, ६ नौ कुल जोड़ कर ४० हुए उसमें, ७ आधे बीस (विष) ।

सत्यसुत सुत[1] पूत[2] ता, तिहि सुत[3] सुत[4] को जान ।
ताके सुत[5] सुत[6] के सदा, रक्षक[7] नमो पिछान ।।९७।।

१ शान्तनु, २ चित्रवीर्य, ३ पण्डू, ४ अर्जुन, ५ अभिमन्यु, ६ परीक्षित, ७ श्री कृष्ण ।

व्यास मात[1] पति[2] पूत[3] ता, सुत[4] सुत[5] के जो मिंत[6] ।
ता वन्दन ते भय मिटे, जप मन होय निचिंत ।।९८।।

१ मत्स्योदंरी, २ शान्तनु, ३ चित्रवीर्य, ४ पण्डू, ५ अर्जुन, ६ श्री कृष्ण ।

ऋषि[1] अस्थि याचक[2] अरि[3], ताहि भ्रात[4] ता भ्रात[5] ।
तात[6] ताहि रिपु[7] को भजो, साम सुबह प्रभात ।।९९।।

१ दधीचि, २ इन्द्र, ३ मेघनाद, ४ अहिरावण, ५ नरान्तक, ६ रावण, ७ श्री राम ।

कृष्ण मातु[1] भ्राता[2] पिता[3], तात[4] सुता[5] पति[6] जान ।
ता सुत[7] के जो मित्र[8] है, "रामप्रकाश" लख गान ।।१००।

१ देवकी, २ कंस, ३ उग्रसेन, ४ देवक, ५ कुन्ती, ६ पण्डु, ७ अर्जुन, ८ श्री कृष्ण ।

कुन्ती पति[1] सुत[2] के पिता[3], वाहन[4] भगनि[5] के तात[6] ।
ताहि सुता[7] पति[8] को नमो, "रामप्रकाश" जप गात ।।१०१।।

१ पण्डु, २ अर्जुन, ३ इन्द्र, ४ ऐरावत, ५ रंभा, ६ समुद्र, ७ लक्ष्मी, ८ श्री विष्णु ।

अर्जुन भ्राता[1] तात[2] सुत[3], भूता जननी[4] की मात[5] ।
ताहि तात[6] पितु[7] के पिता[8], नमस्कार दिन रात ।।१०२।।

१ भीम, २ पवन, ३ हनुमान, ४ अंजनी, ५ अहिल्या, ६ ब्रह्मा, ७ कमल, ८ विष्णु भगवान ।

श्री शुकदेव के तात[१] के, तात[२] पत्नि[३] पति[४] जान ।
ता सुत[५] गुरु[६] के अरी[७] भज, "रामप्रकाश" कल्यान ।।१०३।।

१ व्यास, २ पारासर, ३ सत्यवती, ४ शान्तनु, ५ भीष्म, ६ परसराम, ७ श्री रामचन्द्र ।

अज[१] सुत[२] सुत[३] ता भ्रात[४] के, ता सुत[५] के सुत[६] जान ।
ता सुत[७] सुत[८] के इष्ट[९] को, नमस्कार पहिचान ।।१०४।।

१ ब्रह्मा, २ भृगु, ३ शुक्राचार्य, ४ सौंध, ५ औरव, ६ ऋचिक, ७ यमदग्नि, ८ परसराम, ९ शिव ।

मय तनया[१] पति[२] पूत[३] ता, लघु तात[४] की नार[५] ।
इष्ट[६] ताहि सेवक[७] प्रभु[८], ता भज बारम्बार ।।१०५।।

१ मन्दोदरी, २ रावण, ३ मेघनाद, ४ विभीषण, ५ सरमा, ६ सीता, ७ लक्ष्मण, ८ श्री राम ।

हररिम ता शिष्य[१] जो, ता शिष्य[२] शिष्य[३] को जान ।
ताहि शिष्य[४] मम इष्ट गुरु, "रामप्रकाश" पहिचान ।।१०६।।

१ जीयारामजी, २ सुखरामजी, ३ अचलरामजी, ४ उत्तमरामजी ।

सतगुरु उत्तमराम जी, ता भगनी[१] को जान ।
ता कन्या[२] पतिदेव[३] के, सुत[४] की रचना मान ।।१०७।।

१ पूर्णाबाई, २ धमदिवी, ३ भिख्यारीदास, ४ रामप्रकाश ।

संवत् नैन[१] नभ[२] नभ निधि[३], अर्क[४], कन्या[५] पक्ष चन्द ।
रची बाल धी मंजरी, "रामप्रकाश" हर द्वन्द ।।१०८।।

१ दो, २ दो शुन्य, ३ नौ, ४ कन्या की संक्राति, ५ शुक्लपक्ष ।

संवत् २००९ भाद्रपद शुक्ल पक्ष दूज तिथि

Scanned with Cam
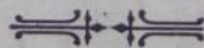
श्री गूढार्थ भजन मंजरी

द्वितीय भाग "राश्यार्थ" राशिकूट

दोहा - छन्द

कुम्भ[१] कर्क[२] पहले तपे, मकर[३] कुम्भ[४] के भाय ।
मेष[५] वृषभ[६] गुरु शिष्य को, तुला[७] शीश नमाय ।।१।।

१ गंगारामजी, २ हरिरामजी, ३ जीयारामजी, ४ सुखरामजी, ५ अचलरामजी, ६ उत्तमरामजी, ७ रामप्रकाश (रचयिता) ।

कर्क[१] मकर[२] में तप तपे, शिष्य मकर[३] के कुम्भ[४] ।
ताके मेष[५] शिष्य वषभ[६] भये, तुला[७] मकर[८] में लुम्भ ।।२।।

१ हरीरामजी, २ जोधपुर, ३ जीयारामजी, ४ सुखरामजी, ५ अचलरामजी, ६ उत्तमरामजी, ७ रामप्रकाशाचार्य, ८ जोधपुर में लुभायमान हो गये ।

प्रथम नमो कुंभ[१] कुंभ[२] को, कुम्भ[३] तुला[४] वृष[५] जान ।
"रामप्रकाश" तुला[६] नमे, पंचदेव प्रधान ।।३।।

१ गणपति, २ शिव, ३ शक्ति, ४ रवि, ५ विष्णु, ६ रचयिता का प्रणाम ।

नमो कुम्भ[१] महाप्रभु को, पंच देवों के ज्ञान ।
पंच मिथुन[२] का हरण कर, "रामप्रकाश" उर आन ।।४।।

१ गुरुदेव, २ क्लेश ।

कुम्भ[१] कुम्भ[२] के घर बसे, मेष[३] वृषभ[४] घर आय ।
कुम्भ[५] के घर कुम्भ[६] तुला[७] को, "रामप्रकाश" मनाय ।।५।।

१ शिव, २ शिवा (पार्वती), ३ लक्ष्मी, ४३ विष्णु, ५ गणपति, ६ सिद्धि, ७ ऋद्धि ।

कुम्भ[१] पति है मेष[२] को, ता घर मकर[३] मान ।
मीन[४] प्रजापति सहित को, "रामप्रकाश" शुभ जान ।।६।।

१ शची, २ इन्द्र, ३ जयन्त, ४ देव पति ।

Scanned with Cam

कुम्भ[१] पति पत्नि तुला[२] के, ताहि तात कुम्भ[३] पाय ।
ताहि सुता पति मेष[४] वृष[५], "रामप्रकाश" मनाय ।।७।।
१ सुरपति, २ रम्भा, ३ समुद्र, ४ लक्ष्मी, ५ विष्णु ।

कुम्भ[१] कुम्भ[२] तुला[३] नमो, कुम्भ[४] कन्या[५] वर भूप ।
मेष[६] वृश्चिक[७] कुम्भ[८] को नमो, "रामप्रकाश" के रूप ।।८।।
१ गणपति, २ सिद्धि, ३ ऋद्धि, ४ शिव, ५ पार्वती, ६ लक्ष्मी, ७ नारायण, ८ सतगुरु ।

तुला[१] तुला[२] के है अरि, ता भ्राता वृष[३] जान ।
ताके इष्ट तुला[४] जपो, "रामप्रकाश" कल्यान ।।९।।
१ राम, २ रावण, ३ विभीषण, ४ राम ।

कुम्भ[१] वंश तुला[२] वंशी, मेष[३] पुत्र भये मीन[४] ।
ता पत्नि मिथुन[५] सुते, "रामप्रकाश" तुल[६] चीन ।।१०।।
१ सूर्यवंश, २ रघुवंशी, ३ अज, ४ दशरथ, ५ कौशल्या, ६ राम को जानो ।

सतगुरु वृष[१] और परमगुरु, मेष[२] गुरु कुम्भ[३] जान ।
ताके गुरु मकर[४] सदा, "रामप्रकाश" पहिचान ।।११।।
१ उत्तमरामजी, २ अचलरामजी, ३ सुखरामजी, ४ जीयारामजी, (जीवन)

मेष[१] तात कुम्भ[२] के अरि, मेष[३] उदय हो जास ।
कुम्भ[४] सुता जप मेष[५] पति, वृषभ[६] "रामप्रकाश" ।।१२।।
१ चन्द्र, २ समुद्र, ३ अगस्त, ४ समुद्र, ५ लक्ष्मी, ६ विष्णु ।

कुम्भ[१] कन्या तुला[२] पति, मेष[३] पुत्र मेष[४] रास ।
ता भ्राता मिथुन[५] अरि, मिथुन[६] रामप्रकाश ।।१३।।
१ समुद्र, २रम्भा, ३ इन्द्र, ४ अर्जुन, ५ कौरव, ६ कृष्ण ।

Scanned with Cam

वृष[१] पुत्र कन्या[२] जने, वृष[३] सुत तुला[४] इष्ट ।
कुम्भ[५] पुत्र कुम्भ[६] को नमो, "रामप्रकाश" वरिष्ठ ।।१४।।
१ ब्रह्मा, २ पुलस्त, ३ विश्रवा, ४ रावण, ५ शिव, ६ गणेश ।

कन्या[१] सुत धन[२] के अरि, मिथुन[३] घरनी कुम्भ[४] रास ।
ता बहिना तुला[५] घरे, भ्रात तुला[६] अरि[७] खास ।।१५।।
१ पृथ्वी, २ भोमासर, ३ कृष्ण, ४ सत्यभामा, ५ रूक्मणी, ६ रूक्म, ७ कृष्ण ।

कर्क[१] सुता कन्या[२] पति, कुम्भ[३] शीश घर मेष[४] ।
तात कुम्भ[५] सुता मेष[६] लखे, ता पति वृषभ[७] रेश ।।१६।।
१ हिमालय, २ पार्वती, ३ शिव, ४ चन्द्र, ५ समुन्द्र, ६ लक्ष्मी, ७ विष्णु ।

वृषभ[१] सुत मिथुन[२] लखो, ताके कुम्भ[३] वंश आन ।
निमि वंश भकर[४] सुता, कुम्भपति[५] तुला जान ।।१७।।
१ ब्रह्मा, २ कश्यप, ३ सूर्य, ४ जनक, ५ सीता, ६ राम ।

कुम्भ[१] सुत कुम्भ[२] की भगनी जो, मेष[३] पति वृष[४] मान ।
"रामप्रकाश" ता भजन ते, होय तुरन्त कल्यान ।।१८।।
१ सिंधु, २ शंख, ३ लक्ष्मी, ४ विष्णु ।

कर्क[१] सुता कन्या[२] पति, कुम्भ[३] तिलक जो मेष[४] ।
वाहन कर्क[५] भक्ष मिथुन[६] की, मात कन्या[७] है रेश ।।१९।।
१ हिमालय, २ पार्वती, ३ शिव, ४ चन्द्र, ५ हरिण, ६ घास, ७ पृथ्वी ।

वृष[१] सुत मिथुन[२] भगनि जो, मेष[३] पति कुम्भ[४] जान ।
ता अरि मेष[५] को धारते, "रामप्रकाश" कुम्भ[६] मान ।।२०।।
१ ब्रह्मा, २ कश्यप, ३ अहिल्या, ४ गोतम, ५ चन्द्र, ६ शिव ।

मिथुन[१] सुत वृषभ[२] सुते, चार कुम्भ[३] के इष्ट ।
वृश्चिक[४] को जप मानवा, "रामप्रकाश" अभिष्ट ।।२१।।
१ कमल, २ ब्रह्मा, ३ सनकादि, ४ नारायण ।

कन्या[१] सुत मेष[२] मेध[३] जो, ता घरनी वृष[४] जान ।
ता सुत कन्या[५] रक्षक को, कुम्भ[६] युत मिथुन[७] पिछान ।।२२।।
१ पण्डु, २ अर्जुन, ३ अभिमन्यु, ४ उत्तरा, ५ परीक्षित, ६ श्री, ७ कृष्ण ।

कुम्भ[१] सुता कुम्भ[२] के पति, वृषभ[३] भूषण मिथुनास[४] ।
ताहि तात कुम्भ[५] तुल सुता, पति वृष[६] "रामप्रकाश" ।।२३।।
१ सागर, २ श्री, ३ विष्णु, ४ कौस्तुभ मणि, ५ रम्भा, ६ इन्द्र ।

कुम्भ[१] सुता तुल[२] के पति, वृषभ[३] सुत मेष[४] जान ।
ता भ्राता वृश्चिक[५] इष्ट, मिथुन[६] भजे कल्यान ।।२४।।
१ सागर, २ रम्भा, ३ इन्द्र, ४ अर्जुन, ५ युधिष्ठर, ६ कृष्ण ।

कुम्भ[१] सुत मिथुन[२] मित्र के, मीन[३] भ्रातः को जान ।
वृश्चिक[४] भ्रात मेष[५] इष्ट सो, मिथुन[६] भजे कल्यान ।।२५।।
१ सूर्य, २ कर्ण, ३ दुर्योधन, ४ युद्धिष्ठर, ५ अर्जुन, ६ कृष्ण ।

मिथुन[१] पत्नि मीन[२] सुत, वृषभ[३] दाता वृष[४] मान ।
सुत वृष[५] सुता वृष[६] के, पति वृष[६] वंश जान ।।२६।।
१ कश्यप, २ दिति, ३ वामन, ४ बलि, ५ बाणासर, ६ ऊषा, ७ अनिरूद्ध ।

कर्क[१] सुत कन्या[२] सुत वृषभ[३], सुत वृष[४] सुत वृष[५] जान ।
ताके अरि जो मिथुन[६] को, "रामप्रकाश" भज मान ।।२७।।
१ हिरण्य कश्यप, २ प्रहलाद, ३ वीरोचन, ४ बलि, ५ बाणासुर, ६ कृष्ण ।

मकर[1] सुत मिथुन[2] सदा, ता सुत मिथुन[3] को जान ।
ता सुत वृषभ[4] सुत जपे, कुम्भ[5] एक कर्क[6] मान ।।२८।।
१ जल, २ कीचड़, ३ कमल, ४ ब्रह्मा, ५ सनकादि, ६ हरि ।

वृश्चिक[1] घरनी तुला[2] लखो, ता भगनी सिंह[3] पति कुम्भ[4] ।
ता रिपु कन्या[5] गर्व हरि, तुल[6] राघव जप कुम्भ[7] ।।२६।।
१ यमदग्नि, २ रेणुका, ३ माधुरी, ४ सहस्रार्जुन, ५ परसुराम, ६ राम, ७ शठ ।

वृषभ[1] वाहन वृषभ[2] के तात, कुम्भ[3] सुता मेष[4] ।
ता सखि कन्या[5] पति सिंह[6] जो, "रामप्रकाश" लख रेश ।।३०।।
१ इन्द्र, २ ऐरावत, ३ समुद्र, ४ लक्ष्मी, ५ पार्वती, ६ महादेव ।

कुम्भ[1] सुता जो मेष[2] को, ताहि जनक कुम्भ[3] जान ।
ताके सुत कुम्भ[4] धारक को, वृश्चिक[5] जपे कल्यान ।।३१।।
१ सागर, २ लक्ष्मी, ३ समुद्र, ४ शंख, ५ नारायण ।

कर्क[1] सुता कन्या[2] पति, कुम्भ[3] सुत कुम्भ[4] को जान ।
सुत युगल कुम्भ[5] मेष[6] को, चाहत सब जग मान ।।३२।।
१ हिमालय, २ पार्वती, ३ शिव, ४ गणेश, ५ शुभ, ६ लाभ ।

वृषभ[1] सुत मिथुन[2] कहै, ता सुत कुम्भ[3] पहिचान ।
ताके वंशज तुल[4] सदा, "रामप्रकाश" तुल[5] मान ।।३३।।
१ ब्रह्मा, २ कश्यप, ३ सूर्य, ४ रामचन्द्र, ५ रचयिता ।

कुम्भ[1] सुत सिहं[2] भ्राता वृषभ[3], ता धारक कर्क[4] जान ।
"रामप्रकाश" ता शरण तुल[6], होय मिथुन[7] निरवान ।।३४।।
१ समुद्र, २ मोती, ३ ऐरावत, ४ शंख, ५ हरि, ६ रचयिता, ७ कल्यान ।

Scanned with Cam

मेष[1] पति वृषभ[2] भजो, कन्या[3] पति कुम्भ[4] मान ।
तुला[5] पति जो मिथुन[6] को, कुम्भ पति[7] तुल[8] भज जान ।।३५।।
१ लक्ष्मी, २ विष्णु, ३ पार्वती, ४ शिव, ५ रूकमणि, ६ कृष्ण, ७ शठपति, ८ रचयिता ।

वृषभ[1] पुत्र मिथुन[2] कहे, ता भगनी भई मीन[3] ।
ता पति वृषभ[4] पुत्र को, मिथुन[5] जपे नित दीन ।।३६।।
१ उग्रसेन, २ कंश ३ देवकी, ४ वसुदेव, ५ कृष्ण ।

मकर[1] सुत मिथुन[2] कहै, ता सुत वृषभ[3] पहिचान ।
मकर[4] रचयिता[5] तात[6] को, "रामप्रकाश" ले जान ।।३७।।
१ जल, २ कमल, ३ ब्रह्मा, ४ जग, ५ ब्रह्मा, ६ विष्णु ।

कुम्भ[1] अरि कुम्भ[2] भ्रात जो, मेष[3] स्वामी कुमभ[4] जान ।
ताके शिष्य कुम्भ[5] इष्ट तुल[6], "रामप्रकाश" पहिचान ।।३८।।
१ सर्प, २ गरूड़, ३ अरूण, ४ सूर्य, ५ हनुमान, ६ राम ।

कर्क[1] सुता कन्या[2] पति, कुम्भ[3] गल कुम्भ[4] का हार ।
ताके अरि कुम्भ[5] पति कर्क[6], "रामप्रकाश" भज तार ।।३९।।
१ हिमालय, २ पार्वती, ३ शिव, ४ सर्प, ५ गरूड़, ६ हरि ।

कुम्भ[1] पिता कुम्भ[2] पत्नि जो, कन्या[3] तात कर्क[4] भ्रात ।
कुम्भ[5] धारक मिथुन[6] जपो, "रामप्रकाश" विख्यात ।।४०।।
१ गणेश, २ शिव, ३ पार्वती, ४ हिमालय, ५ गोवर्धन, ६ कृष्ण ।

कुम्भ[1] सुत तुला[2] मेष[3] धन[4], धन[5] मेष[6] कर्क[7] जान ।
मिथुन[8] कर्क[9] कुम्भ[10] कुम्भ[11] जो, कुम्भ[12] सिंह[13] मिथुनान[14] ।।४१।।
१ सागर, २ रम्भा, ३ चन्द्र, ४ धनुष, ५ धनवन्तरि, अमृत, ७ हलाहल, ८ कामधेनु, ९ हय (घोड़ा), १० शंख, ११ गयन्द, १२ सुरा, १३ मणि, १४ कल्पवृक्ष (चौदह रत्न) ।

Scanned with Cam

कुम्भ[1] पति वाहन वृष[2] को, ता भगनी तुल[3] तास ।
श्री[4] भ्राता सिंह[5] मेष[6] सो, भगनी मेष[7] वृष[8] भास ।।४२।।
१ इन्द्र, २ एरावत, ३ रम्भा, ४ लक्ष्मी, ५मोती, ६ चन्द्र, ७ लक्ष्मी, ८ विष्णु ।

तुला[1] अवतारी कर्क[2] पितु, कन्या[3] पति वृष[4] जान ।
ता पत्नि तुल[5] भगनी पति, मेष[6] वृष[7] पहिचान ।।४३।।
१ रूद्र, २ हनुमान, ३ पवन, ४ इन्द्र, ५ रम्भा, ६ लक्ष्मी, ७ विष्णु ।

तुल[1] तनया वृश्चिक[2] पति, मिथुन[3] सखा मेषान[4] ।
ताके धन[5] पर कर्क[6] रह, "रामप्रकाश" गुरु मान ।।४४।।
१ रवि, २ यमुना, ३ कृष्ण, ४ अर्जुन, ५ ध्वज, ६ हनुमान ।

मिथुन[1] पौत्र मेष[2] वाहना, मेष[3] रिपु तुल[4] होय ।
ता रिपु कुम्भ[5] तनया वृश्चिक[6], पति मिथुन[7] जप जोय ।।४५।।
१ कृष्ण, २ अनिरूद्ध, ३ चकवा, ४ रात्रि, ५ सूर्य, ६ यमुना, ७ कृष्ण ।

मिथुन[1] सखा मेष[2] बन्धु जो, धन[3] तात वृष[4] जान ।
ताके सुत कर्क[5] इष्ट तुल[6], "रामप्रकाश" जप ध्यान ।।४६।।
१ कृष्ण, २ अर्जुन, ३ भीम, ४ वायु, ५ हनुमान, ६ राम ।

मेष[1] धन[2] कुम्भ[3] वृश्चिक[4] जो, वृश्चिक[5] मिथुन[6] जो मात ।
ताके अनुज वृष[7] तनय वो, मिथुन[8] भजे कुशलात ।।४७।।
१ अर्जुन, २ भीम, ३ सहदेव, ४ युधिष्टर, ५ नकुल, ६ कुन्ती, ७ वासुदेव, ८ कृष्ण ।

मेष[1] तनय जो मीन[2] को, ता सुत तुल[3] के दास ।
कर्क[4] राश्यार्थ इष्ट वह, तुल[5] रचयिता वास ।।४८।।
१ अज, २ दशरथ, ३ राम, ४ हनुमान, ५ रामप्रकाश ।

Scanned with Cam

मिथुन[१] भ्रात जो कुम्भ[२] लख, जननी कन्या[३] तास ।
पति कुम्भ[४] जिहि नाम जप, सो तुल[५] इष्ट प्रवास ।।४६।।
१ कार्तिक, २ गणेश, ३ पार्वती, ४ शिव, ५ राम ।

मिथुन[१] दोष कवि ना लखो, यामे तुल[२] गुण एक ।
वृश्चिक[३] सेवत धन[४] हरे, पावे कुम्भ[५] अनेक ।।५०।।
१ काव्य, २ राम, ३ नाम, ४ भव, ५ सुख ।

वृश्चिक[१] करे सिंह[२] एक की, कुम्भ[३] न पावे शान ।
मिथुन[४] कन्या[५] सम वे सभी, मीन[६] कर मति हान ।।५१।।
१ नकल, २ मोरी, ३ सन्मान, ४ कवि, ५ पूत, ६ देख कर ।

मिथुन[१] तात कुम्भ[२] कुम्भ[३] सुत, भ्राता वृष[४] को जान ।
भगनी मेष[५] ता प्रियतम, "रामप्रकाश" वृष[६] मान ।।५२।।
१ कामधेनु, २ सागर, ३ शंख, ४ ऐरावत, ५ लक्ष्मी, ६ विष्णु ।

धन[१] वाहन वृष[२] भ्रात वृष[३], तात कुम्भ[४] सुता मेष[५] ।
ता भरता वृश्चिक[६] लखो, "रामप्रकाश" जप भेष ।।५३।।
१ भास्कर, २ उच्चैश्रवा, ३ ऐरावत, ४ सागर, ५ लक्ष्मी, ६ नारायण ।

मिथुन[१] सुत कन्या[२] सुते, मेष[३] पत्नि वृष[४] तात ।
वृष[५] इष्ट कुम्भ[६] कुम्भ[७] को, "रामप्रकाश" जप लात ।।५४।।
१ कृष्ण, २ प्रद्युम्न, ३ अनिरूद्ध, ४ ऊषा, ५ बाणासुर, ६ शंकर, ७ गणपति ।

कुम्भ[१] कुम्भ[२] के संग में, कुम्भ[३] कुम्भ[४] के साथ ।
भक्त जपे निशि दिन सदा, "रामप्रकाश" के हाथ ।।५५।।
१ शिव, २ गणपति, ३ शक्ति, ४ सिंह ।

Scanned with Cam

वृषभ[१] मेष[२] संग रहत है, कुम्भ[३] शैय्या पर होय ।
कुम्भ[४] भीतर नित ही रहै, "रामप्रकाश" रट सोय ।।५६।।
१ विष्णु, २ लक्ष्मी, ३ शेष शय्या, ४ सागर ।

मिथुन[१] कुम्भ[२] संग कुम्भ[३] के, कुम्भ[४] प्रेम के साथ ।
वृषभ[५] वन में तुल[६] रमे, "रामप्रकाश" तुल[७] हाथ ।।५७।।
१ कृष्ण, २ ग्वाला, ३ गायों में, ४ गोपीका, ५ वृन्दावन, ६ राधिका, ७ रासलीला ।

तुला[१] मेष[२] कुम्भ[३] संग में, कर्क[४] धन[५] कुम्भ[६] होय ।
मेष[७] तुल[८] की सभा में, "रामप्रकाश" कह जोय ।।५८।।
१ राम, २ लक्ष्मण, ३ सीता, ४ हनुमान, ५ भरत, ६ शत्रुघ्न, ७ अयोध्या, ८ राजसभा ।

तुला[१] कुम्भ[२] संग मेष[३] के, कन्या[४] पर्वत पर ताप ।
कर्क[५] करत है चाकरी, "रामप्रकाश" रट जाप ।।५९।।
१ राम, २ सीता, ३ लक्ष्मण, ४ प्रवर्षण, ५ हनुमान ।

तुल[१] चुरावे कुम्भ[२] को, कर्क[३] जलाई मेष[४] ।
कुम्भ[५] लाया तुल[६] को दिया, तुल[७] हन्यो तुल[८] देश ।।६०।।
१ रावण, २ सीता, ३ हनुमान, ४ लंका, ५ सन्देश, ६ राम, ७ राम, ८ रावण के देश लंका की ।

कुम्भ[१] कुम्भ[२] को सम्बन्ध है, कन्या[३] कन्या[४] के संग ।
कन्या[५] कन्या[६] कुम्भ[७] कुम्भ[८] के, जग के सम्बन्ध सुरंग ।।६१।।
१ स्वामी, २ सेवक, ३ पिता, ४ पुत्र, ५ पति, ६ पत्नि, ७ गुरु, ८ शिष्य ।

कुम्भ[१] कुम्भ[२] नित ही करो, धरो वृश्चिक[३] उर माहि ।
कुम्भ[४] वृष[५] बिन ना पके, धन[६] रीझे धन[७] नाहि ।।६२।।
१ गुरु, २ सेवा, ३ नियम, ४ श्रद्धा, ५ विश्वास, ६ भक्ति, ७ भगवान ।

सिंह[१] को खतरा सिंह[२] से, मिथुन[३] बली मकरेश[४] ।
तुल[५] धर तीनों मीन[६] जो, मेष[७] तजे ना रेश ।।६३।।
१ मानव, २ मृत्यु, ३ काल, ४ जगत का ईश्वर, ५ तनधारी, ६ देव, ७ लोक ।

तुल[१] वृश्चिक[२] नित ही जपो, मिथुन[३] माहि तुल[४] एक ।
कुम्भ[५] युक्ति ले उर धरो, "रामप्रकाश" विवेक ।।६४।।
१ राम, २ नाम, ३ कलियुग, ४ राम, ५ सतगुरु ।

मिथुन[१] भगनी मीन[२] पति, वृष[३] मिथुन[४] को मान ।
सिंह[५] को धन[६] ने हत दियो, "रामप्रकाश" पहिचान ।।६५।।
१ कंश, २ देवकी, ३ वसुदेव, ४ कृष्ण, ५ मामा, ६ भाणजा ।

मिथुन[१] सुत कन्या[२] मेष[३] की, पत्नि वृष[४] वृष[५] तात ।
ता सुत वृषभ[६] वृष[७] सुत, इष्ट वृश्चिक[८] कुशलात ।।६६।।
१ कृष्ण, २ प्रद्युम्न, ३ अनिरुद्ध, ४ ऊषा, ५ बाणासुर, ६ बलि, ७ वीरोचन, ८ नृसिंह ।

तुल[१] सुत मीन[२] रू मेष[३] जो, मीन[४] सुत तुला[५] राय ।
"रामप्रकाश" भज ताहि को, वह सुख सहायक थाय ।।६७।।
१ रघु,२ दिलीप, ३ अज, ४ दशरथ, ५ राम ।

कुम्भ[१] कुम्भ[२] वृष[३] सिंह[४] को, कुम्भ[५] कर्क[६] प्रधान ।
मिथुन[७] धन[८] सुख ना लहै, पांच वेर वर्ग जान ।।६८।।
१ गरूड़, २ सर्प, ३ बिल्ली, ४ मूषक, ५ सिंह, ६ हरिण, ७ कुत्ता, ८ भेड़ (मींढा) ।

तुला[१] वृषभ[२] वृश्चिक[३] मिथुन[४], वृश्चिक[५] पांच मिल जोय ।
यह पंचाग तुल[६] के मिले, त्रिस्कन्ध मकर[७] तब होय ।।६९।।
१ तिथि, २ वार, ३ नक्षत्र, ४ करण, ५ योग, ६ राशि, ७ ज्योतिष (पंचांग) ।

वृश्चिक[1] घर तुला[2] भगनी, मिथुन[3] पति कर्क[4] जान ।
ता सुत कन्या[5] वृश्चिक[6] को, "रामप्रकाश" भज मान ।।७०।।

१ यमदग्नि, २ रेणुका, ३ क्याधू, ४ हिरण्यकश्यप, ५ प्रहलाद, ६ नृसिंह ।

कुम्भ[1] कुम्भ[2] शिष्य गुरु के, शिष्य मिथुन[3] की राश ।
कुम्भ[4] धन[5] माता कन्या[6] के, पति[7] भज "रामप्रकाश" ।७१।

१ सुदामा, २ सांदीपन, ३ कृष्ण, ४ सत्यभामा, ५ भोमासुर, ६ पृथ्वी, ७ इन्द्र ।

वृष[1] सुत मिथुन[2] कन्या[3] के, वृषभ[4] सुत तुल[5] इष्ट[6] ।
कुम्भ[6] इष्ट तुल[7] को जपे, "रामप्रकाश" अभिष्ट ।।७२।।

१ ब्रह्मा, २ कश्यप, ३ पुलस्त, ४ विश्रवा, ५ रावण, ६ शिव, ७ राम ।

मेष[1] सुते मीन[2] तुला[3], सेवक कर्क[4] को मान ।
तुल[5] सुत मेष[6] को जो हन्यो, "रामप्रकाश" बलवान ।।७३।।

१ अज, २ दशरथ, ३ राम, ४ हनुमान, ५ रावण, ६ अहिरावण ।

वृश्चिक[1] भ्राता सिंह[2] जो, मेष[3] तुला[4] अरि[5] जान ।
तुला[5] कर्क[6] के भजन से, "रामप्रकाश" कल्यान ।।७४।।

१ नारान्तक, २ मेघनाद, ३ अहिरावण, ४ रावण, ५ राम, ६ हनुमान ।

तुल[1] कुम्भ[2] मेष[3] रू वृष[4] को, धन[5] कुम्भ[6] को योग ।
कुम्भ[7] सिंह[8] जोड़ी चार को, धन्य योग संयोग ।।७५।।

१ राम, २ सीता, ३ लक्ष्मण, ४ उर्मिला, ५ भरत, ६ श्रुति कीर्ति, ७ शत्रुघ्न, ८ माण्डवी ।

तुल[1] संग कुम्भ[2] को भजो, मिथुन[3] तुला[4] संग जान ।
मेष[5] संग वृश्चिक[6] सजे, "रामप्रकाश" कल्यान ।।७६।।

१ राम, २ सीता, ३ कृष्ण, ४ रुक्मणि (राधा), ५ लक्ष्मी, ६ नारायण ।

तुला[१] अरि तुल[२] को भजो, मिथुन[३] मिथुन[४] अरि जान ।
कर्क[५] अरि वृश्चिक भजे, "रामप्रकाश" उर आन ।।७७।।
१ रावण, २ राम, ३ कंश, ४ कृष्ण, ५ हिरण्यकश्यप, ६ नृसिंह ।

हे सिंह[१] सिंह[२] कुम्भ[३] तुल[४] जो, कर्क[५] सिंह[६] धर ध्यान ।
परम कन्या[७] कन्या[८] जपो, "रामप्रकाश" जप आन ।।७८।।
१ माधव, २ मोहन, ३ गोपाल, ४ रामजी, ५ हलधर, ६ मुरलीधर, ७ प्रभु, ८ परमेश्वर

कुम्भ[१] सुत मेष[२] रू मेष[३] के, मीन[४] धन[५] का वंश ।
कुम्भ[६] को लाये जगत हित, कुम्भ[७] वंश अवतंश ।।७९।।
१ सगर, २ असमंजस, ३ अंशुमान, ४ दिलीप, ५ भागीरथ, ६ गंगा, ७ सूर्य ।

कर्क[१] स्वामी तुल[२] इष्ट को, माता मकर[३] मनाय ।
वृश्चिक[४] सुमिरे हेत से, "रामप्रकाश" सुख पाय ।।८०।।
१ हनुमान, २ राम, ३ जानकी, ४ नाम ।

कुम्भ[१] कुम्भ[२] सीतल महा, मेष[३] मेष[४] ते शीत ।
"रामप्रकाश" करिये सदा, हरिये पाप तप मीत ।।८१।।
१ सतसंग, २ ज्ञान (शान्ति), ३ चन्दन, ४ चन्द्र ।

मकर[१] सिंह[२] के हरण को, धन[३] तरण कुम्भ[४] हार ।
कुम्भ[५] कृपा बिन ना तरे, "रामप्रकाश" उचार ।।८२।।
१ जनम, २ मरण, ३ भाव, ४ सागर, ५ सतगुरु ।

तुल[१] सुत सिंह[२] अरि मेष[३] के, भ्रात धन[४] कुम्भ[५] जान ।
ता भावज मकर[६] पति, तुल[७] तुल[८] इष्ट पिछान ।।८३।।
१ रावण, २ मेघनाथ, ३ लक्ष्मण, ४ भरत, ५ शत्रुघ्न, ६ जानकी, ७ रामजी, ८ रचयिता (रामप्रकाश) के इष्ट है ।

Scanned with Cam

कुम्भ[1] वाहन सिंह[2] के रिपु, कुम्भ[3] रिपु सिंह[4] पिछान ।
स्वामी मिथुन[5] कन्या[6] मात ता, ता पति कुम्भ[7] सुजान ।।८४।।
१ गणेश, २ मूषक, ३ सर्प, ४ मयूर, ५ कार्तिक, ६ पार्वती, ७ शिव-शंकर ।

कुम्भ[1] पति कुम्भ[2] संग कर्क[3] सुता, कुम्भ[4] मिथुन[5] के संग ।
वृष[6] सभा में कर्क[7] संग, तुला[8] बिखेरे रंग ।।८५।।
१ सुरपति, २ शिव, ३ हेम सुता, ४ गणपति, ५ कार्तिक, ६ ब्रह्मा जी, ७ हरि, ८ रमा ।

कुम्भ[1] कुम्भ[2] तुल[3] कुम्भ[4] की, कर पूजा नित नेम ।
कर्क[5] जपो हर कन्या[6] को, "रामप्रकाश" उर प्रेम ।।८६।।
१ गंगा, २ शालिग्राम, ३ तुलसी, ४ गुरु, ५ हरि, ६ पाप-ठगी ।

कन्या[1] सेवा कन्या[2] हरे, तुल[3] हरे तुल[4] जोय ।
कन्या[5] तुल[6] दोनों हरे, एक कर्क[7] उर होय ।।८७।।
१ प्रभु, २ पाप, ३ तुलसी, ४ ताप, ५ पाप, ६ ताप, ७ हरि ।

वृश्चिक[1] कर के मेष[2] हर, सिंह[3] धन[4] धर के देख ।
सहजे धन[5] धन[6] हरण हो, "रामप्रकाश" सुख रेख ।।८८।।
१ न्याय, २ अन्याय, ३ मानव, ४ धर्म, ५ भव, ६ भय ।

मिथुन[1] मेष[2] सिंह[3] बेच के, लावो धन[4] अरू मेष[5] ।
सो मकर[6] आधार है, "रामप्रकाश" कह देख ।।८९।।
१ कनक (सोना), २ चांदी (चमक), ३ मणि-माणक, ४ धान (अन्न), ५ चावल, ६ जीवन (जल)

मेष[1] मकर[2] धन[3] दान दे, कर्क[4] कुम्भ[5] कर सेव ।
सिंह[6] मकर[7] सब में हरि, "रामप्रकाश" कह भेव ।।९०।।
१ अन्न, २ जल, ३ धन, ४ हरि, ५ गुरु, ६ मानव, ७ जन्तु ।

Scanned with Cam

वृष[1] धन[2] कुम्भ[3] कुम्भ[4] कहै, कन्या[5] कुम्भ[6] कहै सार।
कर्क[7] कुम्भ[8] कुम्भ[9] को करो, "रामप्रकाश" विचार ॥६१॥
१ वेद, २ धर्म, ३ सन्त, ४ शास्त्र, ५ पुराण, ६ स्मृति, ७ हरि, ८ गुरु, ९ सेवा।

वृषभ[1] कुम्भ[2] कुम्भ[3] कुम्भ[4] को, सिंह[5] में कन्या[6] मान।
कुम्भ[7] धन[8] धारण करो, "रामप्रकाश" बुद्धिमान ॥६२॥
१ उत्तम, २ सेवा, ३ सन्त, ४ गुरु, ५ मानव, ६ परमात्मा, ७ सरलता, ८ धर्म।

धन[1] धन[2] धन[3] अरू कुम्भ[4] के, और वृश्चिक[5] है काम।
सिंह[6] सो कर्क[7] समान है, "रामप्रकाश" जप राम ॥६३॥
१ भिक्षा, २ भोजन, ३ भजन, ४ सन्त, ५ नहीं, ६ मानव, ७ हरि।

सब कुम्भ[1] को सार है, सभी कुम्भ[2] का लेख।
सब कुम्भ[3] को तत्व है, "रामप्रकाश" को देख ॥६४॥
१ शास्त्र, २ सन्त, ३ साधना।

कुम्भ[1] मिथुन[2] धन[3] धारणा, जीवन को यह सार।
तुल[4] भजन-कुम्भ[5] से तरो, "रामप्रकाश" विचार ॥६५॥
१ शुभ, २ कर्म, ३ धर्म, ४ राम, ५ संसार।

वृश्चिक[1] भ्राता धन[2] तात जो, कुम्भ[3] शिष्य कर्क[4] जान।
ताके संग तुल[5] पूजनो, "रामप्रकाश" कल्यान ॥६६॥
१ यमुना, २ धर्मराज, ३ सूर्य, ४ हनुमान, ५ राम।

धन[1] भगनी वृश्चिक[2] लखो, तात तुल[3] शिष्य[4] जोय।
वृष[4] इष्ट तुल[5] सुमरिये, "रामप्रकाश" सुख होय ॥६७॥
१ धर्मराज, २ यमुना, ३ रवि, ४ बजरंग बली, ५ रामचन्द्र।

Scanned with Cam

मेष[1] घरनी कुम्भ[2] पुत्र है, मकर[3] रक्षक[4] भगवान ।
मिथुन[4] नाम को सुमरिये, "रामप्रकाश" कल्यान ।।९८।।
१ अर्जुन, २ सुभद्रा, ३ जनमेंजय, ४ कृष्ण ।

वृषभ[1] शिष्य कुम्भ[2] कन्या[3] को, पुत्र मेष[4] शुभ जान ।
तात मेष[5] के इष्ट मिथुन[6], "रामप्रकाश" पहिचान ।।९९।।
१ वेद व्यास, २ शुकदेव, ३ परीक्षित, ४ अभिमन्यु, ५ अर्जुन, ६ कृष्ण ।

कुम्भ[1] मेष[2] सुत मेष[3] सुत, मीन[4] धन[5] के ताप ।
आई भूमि धन[6] भगनि श्री, कुम्भ[7] पुण्य प्रताप ।।१००।।
१ सगर, २ असमंजस, ३ अंशुमान, ४ दिलीप, ५ भागीरथ, ६ भाग्यवती भगवती, ७ गंगा

वृषभ[1] सुत धन[2] के गुरु, वृश्चिक[3] गुरु कुम्भ[4] जान ।
ताके इष्ट वृषभ[5] लखो, "रामप्रकाश" गुरु मान ।।१०१।।
१ उत्तानपाद, २ ध्रुव, ३ नारद, ४ सनकादि, ५ विष्णु ।

वृश्चिक[1] सत्ताईस जोड़िये, कुम्भ[2] नौ वृष[3] चार ।
ताके अर्ध[4] वृषभा[5] लहे, "रामप्रकाश" विचार ।।१०२।।
१ नक्षत्र, २ ग्रह, ३ वेद, ४ विष, ५ विरहिनी ।

वृष[1] मात सिंह[2] के पति, कुम्भ[3] सुत मेष[4] पिछान ।
सुत कन्या[5] के मेष[6] लख, इष्ट मिथुन[7] जप ध्यान ।।१०३।।
१ व्यास, २ मत्सयोदरी, ३ शान्तनु, ४ चित्रवीर्य, ५ पण्डु, ६ अर्जुन, ७ श्री कृष्ण ।

मीन[1] याचक वृष[2] के अरि, सिंह[3] अरि मेष[4] पिछान ।
ताके इष्ट तुल[5] भ्रात को, "रामप्रकाश" कर ध्यान ।।१०४।।
१ दधीचि, २ इन्द्र, ३ मेघनाद, ४ लक्ष्मण, ५ राम ।

Scanned with Cam

मीन[१] भ्रात मिथुन[२] पिता, वृषभ[३] भ्रात है मीन[४] ।
सुता मिथुन[५] पति कन्या[६] है, सुत मेष[७] इष्ट[८] लीन ।।१०५।।

१ देवकी, २ कंश, ३ उग्रसेन, ४ देवक, ५ कुन्ती, ६ पण्डु, ७ अर्जुन, ८ कृष्ण ।

कुम्भ[१] सुता जो मेष[२] है, ता भरता कुम्भ[३] जान ।
ता सुमिरे ही मकर[४] को, होवत शुभ कल्यान ।।१०६।।

१ सागर, २ लक्ष्मी, ३ श्री हरि, ४ जन (भक्त)

सिंह[१] तनया सिंह[२] के पति, तुल[३] अरि तुल[४] को जान ।
प्राण भक्त के एक है, "रामप्रकाश" कल्यान ।।१०७।।

१ मय, २ मन्दोदरी, ३ रावण, ४ राम ।

संवत् युगल[१] कुम्भ[२] कुम्भ[३] पर, मास मेष[४] कुम्भ[५] वार ।
कृष्णा वृष[६] की तिथि, "रामप्रकाश" कृत सार ।।१०८।।

१ दो, २ सहस्र, ३ सतावन, ४ वैशाख, ५ गुरुवार, ६ वदि दूज ।

बीस एप्रिल युग सहस्र में, रची बाल धी जान ।
राश्यार्थ कविता कही, "रामप्रकाश" वरियान ।।१०९।।

श्री गूढार्थ भजन मंजरी

तृतीय भाग "विचार मंथन" काव्य

नियम अष्टक 1

धनाक्षरी छन्द

नियम है धर्मसार, नियम है शक्ति वार ।
नियम है सदाचार, विधान आचार है ।।
नियम है संविधान, नियम है धारा क्रम ।
नियम है संयम सो, संघ शक्ति धार है ।।
नियम है कर्म भक्ति, नियम है धर्म भुक्ति ।
नियम है वर्म युक्ति, नियम संसार है ।।
संत "रामप्रकाश" यों, कथत विद्वत वेद ।
नियम सो जीवन में, प्रबल विचार है ।।१।।
नियम से चले जग, नियम से प्रकृति ।
नियम से हिन्दु धर्म, सनातन सार है ।।
नियम से ब्राह्मण है, नियम से क्षत्रिय है ।
नियम से वैश्य होय, शूद्र निरधार है ।।
नियम से बोद्ध होय, नियम से शोद्ध जोय ।
नियम से होत सोय, परम आधार है ।।
संत "रामप्रकाश" यों, कथत विद्वत वेद ।
नियम सो जीवन में, प्रबल विचार है ।।२।।
नियम से ईसाइ हो, नियम से मुस्लिम जो ।
नियम से यहूदी सो, विविध मत सार है ।।

नियम से पारसी हो, ईरान ईराक आदि ।
नियम से सिख ग्रन्थ, गुरु धर्म द्वार है ।।
नियम से जैन आदि, बुद्धिष्ठ अरिहन्त ।
नियम से अनेक देश, करे व्यवहार है ।।
संत "रामप्रकाश यों, कथत विद्वत वेद ।
नियम सो जीवन में, प्रबल विचार है ।।३।।
नियम से मुगल हो, नियम से शेख़ विधि ।
नियम से पठान हो, सय्यद अचा!र है ।।
नियम से शुद्धाशुद्धि, नियम के रहे सब ।
नियम से हीन होत, भ्रष्ट व्यवहार है ।।
नियम से पाप-पुण्य, नियम हीन धर्म-पाप ।
नियम से नीति जाने, ग्रन्थ भेद सार है ।।
संत "रामप्रकाश" यों, कथत विद्वत वेद ।
नियम सो जीवन में, प्रबल विचार है ।।४।।
नियम प्रकृति धर्म, होत है संसार कर्म ।
नियम से पशु-पक्षी, नियम संसार है ।।
नियम से जीव-जन्तु, खान-पान जीविका के ।
नियम से जग-योनि, जीवन आधार है ।।
नियम से धर्म कर्म, नियम से ही शर्म धर्म ।
नियम से ही आन धर्म, परम धर्म सार है ।।
संत "रामप्रकाश" यों, कथत विद्वत वेद ।
नियम सो जीवन में, प्रबल विचार है ।।५।।
नियम के बिना रहे, पशु ते ही हीन पशु ।

Scanned with Cam

नियम के बिना रहे, होय अत्याचार है ।।
नियम के बिना रहे, पाप और अपकीर्ति ।
नियम के बिना रहे, होय व्यभिचार है ।।
नियम के बिना रहे, सता देश भ्रष्ट होय ।
नियम के बिना रहे, नाशे व्यवहार है ।।
संत "रामप्रकाश" यों, कथत विद्वत वेद ।
नियम सो जीवन में, प्रबल विचार है ।।६।।
नियम के बिना रहे, व्याकरण सो नास होय ।
नियम के बिना रहे, संगीत न तार है ।।
नियम के बिना रहे, नृत्य भेद नष्ट होय ।
नियम के बिना रहे, ताल-भेद हार है ।।
नियम के बिना रहे, साम दाम दण्ड नास ।
नियम के बिना रहे, छन्द छन्द कार है ।।
संत "रामप्रकाश" यों, कथत विद्वत वेद ।
नियम सो जीवन में, प्रबल विचार है ।।७।।
नियम ही राज काज, नियम ही मत-पन्थ ।
नियम धर्म सम्प्रदाय, ग्रन्थ गति सार है ।।
नियम ही भक्त सन्त, छोटन को बड़े करे ।
नियम से राजा नेता, पावे सत्कार है ।।
नियम ही वर-वधु, इष्ट-मित्र सखा प्रेम ।
नियम ही जीवन है, नियम संसार है ।।
संत "रामप्रकाश" यों, कथत विद्वत वेद ।
नियम सो जीवन में, प्रबल विचार है ।।८।।

Scanned with Cam

एक-अनेक द्रष्टान्त बावनी 2

दोहा छन्द

उत्तम हरि गुरु एक है, मध्यम विषय अनेक ।
सृष्टि नियमावक अद्वय जो, सो ब्रह्म चेतन एक ।।१।।
सृष्टि विविध अनेक है, ब्रह्म राम सत्य एक ।
भ्रम भ्रान्ति में अनेक है, समझवान कोई एक ।।२।।
मध्यम कनिष्ठ अनेक है, परम पुरुषोत्तम एक ।
रज तम रूप अनेक है, सात्विक सत है एक ।।३।।
समझ द्रष्टान्त अनेक को, परम सिद्धान्त है एक ।
जीवात्म विश्व अनेक है, ब्रह्म चेतन सत एक ।।४।।
बिजली बल्ब अनेक है, बिजली धारा एक ।
घर में सर्किट अनेक है, विद्युत मीटर एक ।।५।।
विद्युत कनेक्शन अनेक है, बिजलीघर है एक ।
बिजली घर अनेक है, उत्पादन मुख्य एक ।।६।।
बाजे विविध अनेक है, बनत संगीत सो एक ।
वाद्य भेद अनेक है, वादक ज्ञानी एक ।।७।।
ताल स्वर अनेक है, राग रागनी एक ।
राग भेद अनेक है, संगीतज्ञ सो एक ।।८।।
स्वर्ण भूषण अनेक है, सोना सब में एक ।
राष्ट्र-भाग अनेक है, भूमि भाग है एक ।।९।।
प्रान्तीय भेद अनेक है, मुख्य राष्ट्र है एक ।
प्रान्त शहर अनेक है, राष्ट्र धरा है एक ।।१०।।

Scanned with Cam

बस्ती गांव अनेक है, शासित तहसील सो एक ।
तहसीलें देख अनेक है, प्रशासन जिला एक ।।११।।
जिले जान अनेक है, प्रान्त समझिये एक ।
प्रान्त विविध अनेक है, राष्ट्र देश है एक ।।१२।।
सांसद भले अनेक है, संसद सभा समय एक ।
बने विधायक अनेक हैं, विधान सभा सो एक ।।१३।।
वाचक संज्ञा अनेक है, वाच्य वस्तु सो एक ।
व्यक्ति नाम अनेक है, व्यक्ति संज्ञा एक ।।१४।।
व्यक्ति वाचक अनेक है, जाति वाचक एक ।
अक्षर-व्यंजन अनेक है, शब्द बनत है एक ।।१५।।
शब्द चित्रण अनेक है, वाक्य बनत है एक ।
वाक्य मिलत अनेक है, भाषा बने तब एक ।।१६।।
साधन करे अनेक सो, साधु बनत है एक ।
हुनर करे अनेक तब, नर बनत है एक ।।१७।।
पुरुषार्थ करे अनेक सो, पुरुष वर्ग तब एक ।
मानवता लक्षण अनेक से, मानव कहलाता एक ।।१८।।
पत्ते डाल अनेक है, वृक्ष साधन वट एक ।
वृक्ष वल्ली अनेक है, वन उपवन तब एक ।।१९।।
अविद्या संसृति अनेक है, विद्या सद्‌गुण एक ।
अपरा जाल अनेक है, परा विद्या है एक ।।२०।।
धर्म पन्थ अनेक है, लक्ष्य सभी का एक ।
वस्त्र रंग अनेक है, धागा सूत सब एक ।।२१।।

Scanned with Cam

गायें रंग अनेक है, दूध धार रंग एक ।
पुष्प रंग अनेक है, पूजा सुगन्धी एक ।।२२।।
यौवन धन अनेक है, नश्वर सब में एक ।
असत्य वस्तु अनेक है, सत्य सब का एक ।।२३।।
प्राणी तन अनेक है, प्राण तत्व सब एक ।
शस्त्र भाति अनेक है, लोहा सब में एक ।।२४।।
खाण्ड खिलौना अनेक है, मीठापन सब एक ।
वनस्पति रस अनेक है, जल धारा सो एक ।।२५।।
पर्वत भांति अनेक है, पत्थर नाम सब एक ।
रंग वर्ग अनेक है, वस्तु गणक है एक ।।२६।।
भैंसादि पशु अनेक है, दुग्ध सफेद सब एक ।
बर्तन भांति अनेक है, मट्टी धातु सब एक ।।२७।।
इन्द्रिय स्वाद अनेक है, अनुभवी मन है एक ।
सूर्य रश्मि अनेक है, रवि दिवस पति एक ।।२८।।
चन्द्र ज्योत्सना अनेक है, चन्द्र कलापति एक ।
शिष्य जिज्ञासु अनेक के, सतगुरु स्वामी एक ।।२९।।
पथिक सन्त अनेक है, मठधारी कोई एक ।
साधु महन्त अनेक है, परम सम्प्रदाय एक ।।३०।।
धर्म सम्प्रदाय अनेक है, साधन रहन सो एक ।
देवादि मन्त्र अनेक है, प्रणव मन्त्र सो एक ।।३१।।
देव के मन्त्र अनेक है, मन्त्र राज व्रत एक ।
इन्द्रिय विषय अनेक है, मन इन्द्रिय पति एक ।।३२।।

चराचर जीव अनेक है, सत चेतन सो एक ।
मूर्ति मन्दिर अनेक है, देव नाम सब एक ।।३३।।
धारा विविध अनेक है, सिद्धान्त उद्देश्य एक ।
कला कलाक्षर अनेक है, परम कलापति एक ।।३४।।
सैनिक काम अनेक है, पर सेनापति एक ।
काम विभाग अनेक है, किन्तु संचालक एक ।।३५।।
पीपल में पत्ते अनेक है, जैसे पीपल एक ।
महल भांति अनेक है, पर किल्ला है एक ।।३६।।
पत्थर चूना अनेक मिलि, भवन बनत है एक ।
विवरण रूप अनेक से, कथन बनत है एक ।।३७।।
पृष्ठ विषय अनेक है, ग्रन्थ कलेवर एक ।
ग्रन्थ कथन अनेक है, विषय वस्तु सो एक ।।३८।।
वर्क पेज अनेक है, शास्त्र ग्रन्थ सो एक ।
समष्ठि माहि अनेक है, व्यष्ठि परमार्थ एक ।।३९।।
व्यतिरेक मणि अनेक है, अनव्य सूत्रवत एक ।
वनस्पति भाति अनेक है, अरण्य वन सो एक ।।४०।।
पुष्प लता अनेक है, बने वाटिका एक ।
फल फूल वृक्ष अनेक है, बाग बनत है एक ।।४१।।
बिम्ब प्रतिबिम्ब अनेक है, रवि प्रकाशक एक ।
जन्म भेद अनेक है, भ्रम व्यथा है एक ।।४२।।
नौ रस कविता अनेक है, काव्य कला सो एक ।
छः रस चार प्रकार है, भोजन बनत है एक ।।४३।।
वाच्य पदार्थ अनेक है, लक्ष्य जीव है एक ।
वाच्य धर्म अनेक है, लक्ष्य ईश्वर सो एक ।।४४।।

Scanned with Cam

चकमक रूप अनेक है, अग्नि रूप मय एक ।
अग्नि रूप अनेक है, दाहक स्वभाव सो एक ।।४५।।
साधन ज्ञान अनेक है, तत्व ज्ञान सो एक ।
साधन योग अनेक है, तत्व योग है एक ।।४६।।
धारा भक्ति अनेक है, परम भक्ति है एक ।
भक्ति भक्त अनेक है, परम पुरुष सो एक ।।४७।।
कारण निमितादि अनेक है, कार्य स्वरूप है एक ।
वृक्ष पल्लवादि अनेक है, बीज सार मय एक ।।४८।।
कला का रूप अनेक है, कला निधि कोई एक ।
कृति ग्रन्थ अनेक है, लेखक कर्ता एक ।।४९।।
खाण्ड खिलौना अनेक है, मिश्री सब में एक ।
वस्त्र बुनकर अनेक है, सूत्र रूई मय एक ।।५०।।
अध्यस्त अनेक अध्यास है, अधिष्ठान सो एक ।
दृश्य भ्रम अनेक है, सीपि रज्जु ठुण्ठ एक ।।५१।।
विविध द्रष्टान्त अनेक है, समर्थ एक का खेल ।
"रामप्रकाश" रचना करे, कथ सिद्धान्त अपेल ।।५२।।
द्रष्टान्त बावनी ज्ञान की, समझे विवेकी कोय ।
एक अनेक सोई एक है, "रामप्रकाश" कह जोय ।।५३।।
युग नभ तंत सप्तक लखो, मेष पूर्णिम गुरुवार ।
"रामप्रकाश" कृत बावनी, दोहे ज्ञान विचार ।।५४।।

इति श्री एक-अनेक दृष्टान्त बावनी समाप्त

छुटकर उपदेश 3

इन्दव छन्द

भाव के बन्धन आय परे तब, भव के बन्धन दूर टरे ।
राग का बन्धन मूल धरे जब, हो अनुराग सुराग भरे ।।
प्रेम को रूप उदार बने जब, नेम रू क्षेम अपार करे ।
"रामप्रकाश" प्रकाश करे तब, भूल अज्ञान को तम हरे ।।१।।
काम के बन्धन मोह भरे तन, मोह में बाधक होय ररे ।
ताहि ते लोभ उपाय रचे बहु, क्रोध कुलाल सहेज धरे ।।
अहंकार अरे उत्पात करे, यह पंच प्रपंच हतास करे ।
"रामप्रकाश" प्रकाश करे तब, भूल अज्ञान को तम हरे ।।२।।
मन मानत है ममता त्वंता तब, चित में चिंतवन होत खरे ।
बुद्धि में बाधक होय जबे अहं, भव के साधक साज धरे ।।
गुरु ज्ञान बिना हरि हेत घना, कछु काम न आवत है सगरे ।
"रामप्रकाश" प्रकाश करे तब, भूल अज्ञान को तम हरे ।।३।।
जग जाल है जालत वार हि वार सो, जन्म रू मरण के फेर करे ।
भव होवत सागर तरंग खरे, जहिं पार न वार अनन्त हरे ।।
पंच प्रपंच न छूटत है तब, गुरु कृपा बिन औघ जरे ।
"रामप्रकाश" प्रकाश करे तब, भूल अज्ञान को तम हरे ।।४।।

अरिल्ल छन्द

सूक्ष्म शूचि क्षण मान, विपल पल घटि देख रे ।
धन्य पहर दिन जान, रात सप्ताह पक्ष पेख रे ।।

मास वर्ष युग छान, कल्प आदि सब जाल है ।
हर हाँ "रामप्रकाश" ले जान, समय कहत सो काल है ।।१।।
बड़ो अप्रबल काल, सृष्टि खाई खात है ।
सृष्टि धरी सब गाल, हरि हर अज प्रभात है ।।
देव दनुज मुनि मान, नर नारि तन धार है ।
हर हाँ "रामप्रकाश" कहै जान, भजो राम इकसार है ।।२।।
नाशवान जग जान, स्थिर रहने को नहीं ।
कुल परिवार परिधान, तात भ्रात माता सही ।।
देव दनुज ऋषि आन, रहे नहीं संसार सों ।
हर हाँ "रामप्रकाश" कहै मान, नाम रूप आधार सो ।।३।।
ध्यावो निरंजन राम, माया प्रकृति पार है ।
रमता अखण्डित नाम, रोम रोम आधार है ।।
गुरु मंत्र यह सार, ओम सोहं को प्रान है ।
हर हाँ "रामप्रकाश" इकतार, हरदम कर पहिचान है ।।४।।
सतगुरु परम कृपाल, दया के धाम रे ।
दीनन हित दयाल, परम निष्काम रे ।।
जिज्ञासु हितकार, निर्गुण सर्गुण होय रे ।
हर हाँ "रामप्रकाश" उपकार, सतगुरु को जोय है ।।५।।
उत्तम राम गुरुदेव, अनाथन नाथ है ।
तन मन से कर सेव, संतन को साथ है ।।
करो शब्द से प्रेम, सुरत कर साधना ।
हर हाँ "रामप्रकाश" नित नेम, परमार्थ को पावना ।।६।।

Scanned with Cam

नमो ब्रह्म गुरु संत, भक्त भक्ति भगवान को ।
एक ही रूप अनन्त, लखो गुरु गम ज्ञान को ।।
कर साधन से प्रीत, द्वेत को खोय रे ।
हर हाँ "रामप्रकाश" लख रीत, चित चेतन में पोय रे ।।७।।

गुरु गम लेता नाहि, शास्त्र अभ्यास है ।
वाद विवाद करताहि, लखे नहीं खास है ।।
सतसंग भक्ति हीन, कैसे कल्यान है ।
हर हाँ "रामप्रकाश" हो दीन, लखे कोईक ज्ञान है ।।८।।

जो चाहौ कल्यान, भजो भगवान को ।
मत कर इर्ष्या मान, तजो अभिमान को ।।
गुरु भक्ति गम लीन, सतसंगत को सेवनो ।
हर हाँ "रामप्रकाश" हो दीन, जगत में रेवनो ।।९।।

बात करे ब्रह्म ज्ञान, चले तुच्छ चाल रे ।
नहीं व्यवहार सुजान, बजावे गाल रे ।।
चेला चेली मूण्ड, चलावे घर बार में ।
हर हाँ "रामप्रकाश" पड़े कुण्ड, नरक निरधार में ।।१०।।

साधे मन्त्र साध, भूत जगावे शमशान में ।
यन्त्र तन्त्र उपाध, लूटे जगत अजान में ।।
कैसे हो कल्यान, पूजे प्रेत रू खेतला ।
हर हाँ "रामप्रकाश" ले जान, शेख़चली वे चेतला ।।११।।

साधे प्रेत पिशच, जादू मेला मश्करा ।
करता धींगा माच, व्यवहार नहीं उन का खरा ।।
बिन साधन बेसार, बातों करता मौकली ।
हर हाँ "रामप्रकाश" विचार, भव में डूबे नौकली ।।१२।।

क़ला करतूत अपार, दिखावे जगत में ।
छल कपट भरमार, भरमावे भगत में ।।
चले ना भक्ति चाल, दुर्व्यशन में डूबता ।
हर हाँ "रामप्रकाश" ह्वै ह्वाल, भव में भोगे चूबता ।।१३।।
कोई कोई पूरा होय, चालता गुरु की रीत में ।
भजन साधना जोय, शुभ व्यवहार की नीत में ।।
सुधारे लोक परलोक, जग को बतावे रास्ता ।
हर हाँ "रामप्रकाश" नहीं शोक, निर्भय डोलत खास्ता ।।१४।।
हस्ती चलता चाल, अम्बाड़ी गलीचा ढार है ।
मस्ता अपने हाल, भूपति होय असवार है ।।
कूकर भुसे हजार, लगे कछु नहीं रोसना ।
हर हाँ "रामप्रकाश" विचार, काहू को नाहि कोसना ।।१५।।
सज्जन साधन सार, दुर्जनों को नहीं देखना ।
चालो सतगुरु लार, सज्जनों को सही पेखना ।।
कुब्दी भुसत हमेश, कर्मों का फल पाय है ।
हर हाँ "रामप्रकाश" कह रेश, सहजे शुभ पद गाय है ।।१६।।
दीखो सुहावन खेल, जगत रंग मोहना ।
प्रपंच माया जेल, मीठा दुःख सोहना ।।
नासत लगे नहीं देर, पतंग रंग जानना ।
हर हाँ "रामप्रकाश" एक बेर, सतगुरु की बातें मानना ।।१७।।
यह जग मिथ्या धार, परिवर्तन माया वादि है ।
रज्जु में सर्प दरार, सीपी में भोडल आदि है ।।
बन्झया सुत नभ बाग, याहि विधि से तोलना ।
हर हाँ "रामप्रकाश" सुभाग, सतगुरु शरण से बोलना ।।१८।।

इति श्री विचार मंथ

मानव जीवनोपयोगी ज्ञानवर्द्धक उत्तम साहित्य

आचार्य सुबोध चरितामृत (सचित्र) सम्प्रदाय शोद्धग्रन्थ

इस ग्रन्थ में श्री वैष्णव संग रामस्नेही धर्म गुरु सम्प्रदाय का प्राचीन मूल स्वरूप से आज तक गुरु परम्परा की ११८ पीढ़ी-प्रणाली बोध, बावन द्वारा पीठ, व्यावहारिक विधान, आध्यात्मिक मान्यताएँ, श्री धाम दर्शन, आश्रम (गुरु पीठ) सूची, पूर्वज गुरु जनों के प्रमुख सैकड़ों चित्र-दर्शनों सहित प्रधान सन्त आचार्य महापुरुषों का ऐतिहासिक एवं साहित्यिक परिचय है । नौ सोपानों में राम सम्प्रदाय, राम कथा-रामायण, गीता आदि का काल दर्शन, विविध उपदेश अंश और ईश्वरावतार राम मन्दिरों के स्वरूप, पंच संस्कार सहित जगद्गुरु आद्य रामानन्दाचार्य पीठ सम्बन्ध परम्परा आदि की प्रतिपाद्य सामग्री का अनुभव चयन है ।

सन्तदास अनुभव विलास
(गुरु स्मृति पाठ) सम्प्रदाय वाणी

यह काव्य ग्रन्थ श्री रामानन्दीय अग्रद्वारस्थ श्री वैष्णव निर्गुण धारा की विशाल रामस्नेही-परम्परा के उद्गम मूल गुरुधाम (दॉन्तड़ा) के आचार्य सर्व श्री स्वामी सन्तदासजी महाराज द्वारा रचित है । इनमें निर्गुण श्री राम उपासना मयी भक्ति, ज्ञान वैराग्य, पाखण्ड-खण्डन, चेतावनी सहित राष्ट्रीय स्तर से सन्त सिद्धान्त मयी विशिष्टाऽद्वैत कथन करते हुए १६६५ दोहा-साखी का ५७ विषयांगों सहित ४ भजन, जम्बूसर कथा आदि में विविध उपदेश सामग्री संकलित है ।

हरिसागर सप्तमावृत्ति (समस्त ज्ञानों का भण्डार)

यह पुस्तक योगीराज श्री स्वामी हरिरामजी महाराज "वैरागी" विरचित कविता के अट्ठाईस भागों में विभक्त है, जो सम्प्रदाय का नित्य पाठ ग्रन्थ एवं अनुभव का बेजोड़ उदाहरण है।

वाणी प्रकाश (छः महात्माओं की वाणी) सप्तमावृत्ति

इसमें जोधपुर गुरु मत परम्परानुगत अनन्त श्री स्वामी श्री हरिरामजी, स्वामी श्री जीयारामजी, स्वामी श्री सुखरामजी, स्वामी श्री अचलरामजी, स्वामी श्री उत्तमरामजी और सन्त रामप्रकाशजी इन छः महात्माओं की वाणियों का विभिन्न राग-रागनियों में संकलन है, जो प्रत्येक सत्संगी पाठकों के योग्य है। अन्त में पिंगल मत का चमत्कार भी दिया है।

अचलराम-भजन-प्रकाश बारहवां संस्करण

संगीत की इस अद्वितीय पुस्तक में वेद-वेदान्त, गीतां, उपनिषद, योग, सांख्य, मीमासां आदि आर्ष ग्रन्थों के सिद्धान्तों का सार भरा है। समस्त राग-रागनियों के नाम तथा ताल, स्वर एवं समय प्रत्येक भजन के ऊपर दिये गये हैं और भूमिका में हारमोनियम बजाने-सीखने की विधि भी बतलाई है, जिससे शास्त्रोक्त संगीत का पाठकों को सहज में ही बोध हो सकता है, परम्परानुगत महापुरुषों के आठ रंगीन दर्शन-चित्रों सहित परिवर्द्धित प्रकाशन है।

उत्तमराम-भजन-प्रकाश द्वितीयावृत्ति

इसमें ब्रह्म, प्रकृति, मुक्ति-तत्व सदाचार सम्बन्धी सब प्रक्रियाओं का गूढ़ रहस्य सरल भाषा में संगीत की चटकीली राग रागनियों में कूट-कूट कर भरा है। समाज शिक्षा राजस्थान सरकार द्वारा तहसील वाचनालयों एवं विकास खण्ड पुस्तकालयों के लिए स्वीकृत आध्यात्मिक पाठ्य पुस्तक है।

Scanned with Cam

अवधूत-ज्ञान-चिंतामणि **द्वितीयावृत्ति**

इस पुस्तक में साहित्यिक काव्य गुणों से पूरित सैंकड़ों छन्द झूलना, इन्दव और भजनों का गहरे अर्थ विवेचना सहित पिंगल, योग, वेदान्त ज्ञान का रहस्य भरा है । राजस्थान सरकार-शिक्षा-विभाग द्वारा प्रादेशिक डिवीजनल एवं जिला पुस्तकालयों के लिए मान्यता प्राप्त है ।

भारतीय-समाज-दर्शन (शास्त्रीय विवेचन)

तृतीय संस्करण

इस पुस्तक में प्राचीन वैदिक काल से लेकर वर्तमान तक के हिन्दू धर्म मय सामाजिक वर्ण व्यवस्था शैली के सब सिद्धान्तों और प्राचीन एवं अर्वाचीन शासन व्यवस्था का आलोच्य स्वरूप तथा उससे लाभ एवं हानियों आदि विषयों को कूट-कूट कर अर्थात् इस छोटी सी पुस्तक रूप "गागर" में विशाल हिन्दू धर्म रूपी "सागर" भरा है । वर्ण, आश्रम के शास्त्रीय स्वरूप व अधिकार चयन को आज के सामाजिक अध्ययन को पक्षपात रहित रोचकता पूर्ण तुलनात्मक विवेचनीय रहस्य को लिखा है । जिसमें वेद, पुराण, उपनिषद्, इतिहास, स्मृत्यादि पांच सौ आर्ष ग्रन्थों के सैकड़ों, उदाहरणों, टिप्पणियों में प्रचुर सामग्री द्वारा समाज के उत्थान और पतन की रूपरेखा का वर्णन किया गया है । राजस्थान शिक्षा विभाग द्वारा जिला पुस्तकालय एवं तहसील पुस्तकालय हेतु मान्य है ।

विश्वकर्मा कला दर्शन **(तीन भागों में)**

सचित्र **द्वितीयावृत्ति**

इस पुस्तक के **प्रथम भाग** में पूजा, मुहर्त एवं कला के तीन अनुच्छेदों में विविध प्रकार से शिल्प कला का महत्व, गज के एक-एक इंची पर प्राकृतिक दैविकं अंश कलाओं का निवास, सर्व गज को ग्रहण करने का

विधान, विश्व की समस्त कलाओं में काम आने वाले ३६ औजारों के नाम सहित राजमिस्त्रियों एवं शिल्प विद्यार्थियों के लिए अत्युपयोगी है। दूसरे भाग में अनेक अनूठे प्रश्नों के शास्त्रीय उत्तर एवं तीसरे भाग में आध्यात्मिक शब्द कोष सहित अनुपम विद्वता का भण्डार है।

नशा-खण्डन-दर्पण (सार्वभोम नशा त्याग विधि)

द्वितीयावृत्ति पुस्तकालय संस्करण

इस में आधुनिक प्रचल्लित व्यसनीय मादक पदार्थ जैसे चाय, तम्बाकू, अफीम, भांग, गांजा, चरस, कोकीन, दारू इत्यादि सार्वभोम छब्बीस नशों का ऐतिहासिक विवरण हजारों डॉक्टरों, वैद्य, हकीमों तथा धर्म-शास्त्र, पुराण, बाईबिल, कुरान आदि आर्ष ग्रन्थों के प्रमाणों, उदाहरणों की रोचकता सहित उन्नतिशील गद्य और मौलिक पद्यात्मक प्रवाह में नशा सीखने के कारण एवं नशा छोड़ने के अचूक उपाय हैं।

रामरक्षा-अनुश्ठान संग्रह चतुर्थावृति

इसमें २१ से अधिक सन्त महापुरुषों द्वारा कही गई रामरक्षाओं का संकलन करके साधन विधि सहित भूत-प्रेत, गृह-बाधा, रोग, संकट-निवारण, परीक्षा, नौकरी आर्जीविका, मुकदमा-विजय आदि सुख समृद्धि साधना के साथ धन प्राप्ति की सफलताओं के प्रदाता मन्त्रों को सरल भाषा में सन्त कृतियों का संकलन लिखा है।

पिंगल रहस्य (छन्द विवेचन)

द्वितीयावृति पुस्तकालय संस्करण

इस पुस्तक में हिन्दी व्याकरण का शास्त्रीय रूप एवं काव्य कला वर्ण और मात्रा के भिन्न-भिन्न संख्या, सूची, प्रस्तार, नष्ठ, उदिष्ठ, मेरु, पताका, मर्कटी आदि के चित्र, शोड़ष कर्म, अंग विस्तार तथा प्रमुख अष्टांगों का

सचित्र विपरीतिकरण विभिन्न काव्यालंकार, रस-अनुप्रास-भेद, श्लेष, यमकादि तथा कई छन्दों की जातियां, रूपक, उदाहरण-विधि लक्षण एवं पर्यायवाची बहुवाची, एकार्थवाची, विलोमादि शब्द संज्ञाओं का बाहुल्य देकर विधेय रीति से नव अनुच्छेदों में लिखा गया है ।

उत्तम बाल ज्योतिष दोहावली तृतीयावृत्ति

इसमें ज्योतिष सम्बन्धी वर्ष विचार, साधारण मुहूर्तों सहित अनेक चमत्कारिक उपयोगी सार के जानने को ७०० दोहा छन्द चुटकलों में देकर जनता के सुविधा हेतु कई अनोखे योग प्रसार किये गये हैं ।

उमाराम अनुभव प्रकाश (सचित्र) षष्ठमावृत्ति

यह स्वामी सुखरामजी महाराज "वैरागी" की लेखनी से लिखा अवधूत स्वामी उमारामजी महाराज कृत अनूठा ग्रन्थ है । जो स्वामी अचलरामजी महाराज द्वारा मूल संशोधित एवं संत रामप्रकाशजी द्वारा परिवर्द्धित अनुमार्जित शुद्ध संस्करण है ।

रामप्रकाश शब्दावली (सचित्र) द्वितीयावृत्ति-दो भाग

प्रस्तुत पुस्तक में आध्यात्मिक समर के विजयी भूत प्रश्न-उत्तर के अनूठे ६० भजन हैं । अन्त में वेदान्त बोध-शब्द संग्रह देकर पुस्तक को प्रत्येक पाठक के उपयोगी बनाया है ।

रामप्रकाश शब्द सुधाकर (सचित्र) द्वितीयावृत्ति-दो भाग

इसमें भैरवी चक्र के पर्दा धर्म, भेष-पूजा के पाखण्ड खण्डन, प्राचीन पौराणिक भूगोल के सात द्वीप छियालीस खण्ड, गुरु "भक्ति युक्त नीति" पूरित बोध मय भजनों के साथ व्यवहारिक, यौगिक एवं आध्यात्मिक संगम है और गृहस्थोपयोगी अनुपम "हरि ज्ञान गर्भ चेतावनी" देकर विशिष्ट निखार लाया गया है । द्वितीय भाग में स्वामी उत्तमरामजी महाराज कृत ७

Scanned with Cam

विपर्यय भजनों की सरल अचलोत्तम टीका है ।

गूढ़ार्थ-भजन-मंजरी

अनेक ऐतिहासिक खोज भरे वन्दना के १०८ दोहों की टिप्पणी सहित देकर पुस्तक को अति उपयोगी बनाई है, जिसे पढ़ते ही एक बार पाठक के मस्तिष्क प्रांगण में कसरत करनी पड़ती है ।

अपूर्व लाख वर्षीय कैलेण्डर

एक १२"X१२" इंची साइज के एक मानचित्र में सन् १ से लेकर ईसवीं के आने वाले एक लाख वर्षों का अर्थात् सृष्टि के अनन्त काल तक के वार, तारीख, महीने एवं वर्ष को देखने की सरल विधि सहित विधान दिया है ।

रत्नमाल चिंतामणि (प्रथम भाग)

इसमें चिन्तनीय अनमोल इच्छा प्रदायक शब्द रत्न जैसे छः सौ प्रश्नों के छः सौ उत्तर तीन सौ दोहों में प्रश्नोत्तरावलि और शिक्षावलि के सौ दोहों में करो न करो (भलो न भलो) के चार सौ उपदेश वचन तथा उपदेशमाला, चौरासी बोल आदि पाठ्य सामग्री है । जो प्रत्येक सत्संगी-विद्वान को सभाजीत एवं सुन्दर योग्यता प्रदान करती है ।

उत्तम बाल योग रत्नावलि (तीन भाग)

इसमें उत्तम बाल (जिज्ञासुओं) के विषय प्रवेशार्थ संक्षिप्त अष्टांग कर्मयोग के बालांग परिचय-प्राणायाम भेद-उपभेद विधि, स्वरोदय त्रियनाड़ी का सम्पन्न सम्पूर्ण ज्ञान-फलसिद्धि दोहों की रचना एवं ज्योतिष के अद्वितीय चुटकुलों सहित कंठस्थ रखने को लाख वर्षों के दो कैलेण्डर और अन्त में उपदेश भजन आदि साधन मार्ग दर्शन, साधना का एक स्रोत रूप कर्म, स्वर, ज्योतिष-भजन के योग तीन भाग संकलित हैं ।

Scanned with Cam

उत्तमराम अनुभव प्रकाश

इसमें स्वामी रामप्रकाशजी कृत भक्ति वेदान्त-ज्ञान, उपदेश विभिन्न राग रागनियों में ३२१ भजनों का अद्वितीय भण्डार है।

सुगम चिकित्सा (प्रथम भाग)

योगिराज स्वामी अचलरामजी महाराज द्वारा लिखित और प्रकाशित विं. सं. १९९२ से शारीरिक बाह्य/अन्तरंग रोगों पर ३२२५ के सुगम चिकित्सा प्रयोग दिये हैं।

विविध रोगों के प्रकार विवरण, रोग होने के कारण, पहिचान लक्षण, पथ्य-अपथ्य सहित रोग निवारण की सुगम चिकित्साएं लिख कर जनता का बड़ा उपकार किया है। सरल और सस्ते अचूक नुस्खे हैं जो घर के आस-पास या घर में उपलब्ध सामग्री से अचानक कभी भी प्रयोग करके योग्य स्वास्थ्य लाभ के साथ धन खर्च को भी बचाया जा सकता है।

सुगम चिकित्सा (द्वितीय भाग)

इस द्वितीय भाग में योगिराज स्वामी अचलरामजी महाराज ने स्त्री-पुरुषों के अनेक गुप्त रोगों पर अनुसन्धान किये। कष्ट साध्य-असाध्य ५६ प्रकार के रोगों पर ५७ विषय-प्रसंगों में २१५० प्रकार के सुगम चिकित्सा प्रयोग दिये हैं।

इसमें पुरुषों के गुप्त रोग, मूत्र सम्बन्धी समस्त रोग, गुदा सम्बन्धी रोग, स्त्रियों के समस्त गुप्त रोग, बच्चों के रोग, चर्मरोग, नशा रोग, अनिन्द्रा आदि विविध प्रकार के विषों का निवारण इत्यादि अनेक प्रसंगों के कारण, लक्षणों सहित उपयोगी और सरल नुस्खे देकर मानव समाज का हित किया है। अन्त में आयुर्वेदिक शास्त्रों में आई जड़ी बूटियों को जानने के लिये अनेक प्रान्तीय भाषाओं में जड़ी-बूटियों के नाम का औषधि शब्द कोष (निघण्टु) भी दिया है।

Scanned with Cam

सुगम उपचार दर्शन (देवीदान औषधि कल्पतरु)

इसमें कई प्रकार की देशी जड़ी बूटियों, आयुर्वेदिक दवाओं के अति सरल और सस्ते परीक्षित नुस्खे सैकड़ों रोगों के अनेक घरेलु उपचार जो आज से सौ वर्ष पहले तपस्याशील अनुभवी स्वामी देवीदानजी महाराज द्वारा प्रसिद्ध गरीबी गुजरान की पुस्तक छपी थी उसी का परिवर्द्धित/संशोधित पाँचवा संस्करण जनिहित के लिये उपलब्ध करवाया गया है।

तिलक प्रबोध दर्शन (तीन भाग)

प्रथम भाग में - तिलक करना क्यों जरूरी है ? कैसे करना ? कब करना ? तिलक का कारण क्या है ? इत्यादि तिलक सम्बन्धी अनेक प्रश्नों के उत्तर अनेक शास्त्रीय प्रमाणों सहित महत्वपूर्ण **दैनिक उपयोगी** मन्त्र संलग्न हैं।

द्वितीय भाग में - मानव जाति दर्शन कर्म से या जन्म से है ? जाति क्या है ? बनाम जाति कैसे ? गद्य एवं पद्यात्मक **एक सौ तीन** कवित छन्द में विस्तृत विवरण कथन है।

तृतीय भाग में - विभिन्न विषयों पर आध्यात्मिक भजनों छन्दों का भण्डार है। पाँच वाणी का विशद निर्णय सहित विवेचन के सात भजन, दृष्टि सृष्टि वाद, गृहस्थ सुधार आदि अनेक प्रसंग खोल कर दरसाये हैं।

पाठकों से निवेदन - महगे डाक खर्च से बचने के लिये अपने यहाँ के प्रसिद्ध बुकसेलर से सम्पर्क करके मांगिये। पाँच से अधिक पुस्तकें एक साथ निम्न पते से मंगवाईये और जिसका मूल्य एवं डाक व्यय सहित पहले मनीऑर्डर से भेजिये।

उत्तम आश्रम, कागा मार्ग, नागोरी गेट के बाहर, जोधपुर - ३४२००६

Scanned with Cam

राम स्तुति मानस संवेदन

राम आधार रहूं निशिवासर, राम के अर्पित देह हमारी ।
राम रखे जिहिं रीति रहूं नित, राम गरीब निवाज सुधारी ।।
राम हि ताप संताप मिटावहि, राम हरि हरिराम मुरारी ।
"रामप्रकाश" है राम की ओट में, कौन सके तकदीर बिगारी ।।१।।
राम बनावत राम बिगारत, राम करे जग का प्रतिपाला ।
राम उपावत राम खपावत, राम स्वामी सब का रखवाला ।।
राम के संत रमे निशि वासर, राम भक्ति रस में मतवाला ।
'उत्तमराम' जाने सब रीति को, 'रामप्रकाश' कट्या सब जाला ।१०।
रामहि एक अनन्त बने वह, राम अनन्त को एक बनावे ।
रामहि प्रेरित कार्य करे सब, चिर अचिर को थिर करावे ।।
राम रमे ब्रह्मण्ड अनन्त में, कारण कारज मांहि समावे ।
"रामप्रकाश" है राम परमेश्वर, जाहि चहै वहि रीति रखावे ।।११।।
राम को नाम सदा सुख धाम सु, भक्त रटे मन प्रेम लगाई ।
नाम प्रताप ते ताप मिटे सब, कर्म किये सब ही कट जाई ।।
मुक्ति रू भक्ति सु भुक्ति मिले वर, संत सदा सुख रूप समाई ।
"रामप्रकाश है राम की ओट में, राम करे प्रतिपाल सदाई ।।१२।।
काहू के जात जमात को बल है, काहू के बस्ती रू खेड़े पटे है ।
काहू के चेले रू सेवक को बल, काहू के सोना रू चांदी खटे है ।।
काहू के जर जकात बाहू बल, काहू के विद्या को मद छटे है ।
राम भरोसो है "रामप्रकाश" के, और सभी बल मूल कटे है ।।५।।

Scanned with Cam

उत्तम आश्रम, जोधपुर का प्रसिद्ध उत्तम साहित्य

१. हरिसागर (गुरु स्मृति)	स्वामी हरिरामजी वैरागी कृत ११०० साखी
२. वाणी प्रकाश	छः महात्माओं की अनुभव वाणी
३. अचलराम भजन प्रकाश	४२५ भजन, सैलाणी
४. उमाराम अनुभव प्रकाश	अचलरामजी महाराज द्वारा संशोधित संस्करण
५. उत्तमराम भजन प्रकाश	(ग्लेज कागज) द्वितीयावृति
६. अवधूत ज्ञान चिंतामणि	झूलना, इन्दव, दोहा, चौपाई द्वितीयावृति
७. पिंगल रहस्य (छन्द विवेचन)	शोड्ष कर्म विपरीतिकरण सचित्र विधि
८. भारतीय समाज दर्शन	वर्ण व्यवस्था का प्राचीन शास्त्रीय रूप
९. नशा खण्डन दर्पण	२६ नशों की त्याग विधि, इतिहास
१०. विश्वकर्मा कला दर्शन	कला, मुहुर्त, पूजन अनुच्छेद सहित शंका-समाधान प्रक्रिया
११. रामप्रकाश शब्दावली	प्रश्नोत्तर भजन, वेदांत पदार्थ
१२. रामप्रकाश शब्द सुधाकर	७ द्वीप, ४६ खण्ड सहित अनुपम भजन, गर्भ चेतावनी
१३. उत्तम राम प्रकाश भजन प्रदीपिका	गुरु-शिष्य के बेजोड़ अनुभव भजन
१४. रामरक्षा अनुष्ठान संग्रह	२१ रक्षाऐं, साधन विधि सहित
१५. गूढार्थ भजन मंजरी (तीन भाग)	गोप्यार्थ, राश्यार्थ एवं विचार मन्थन सटिप्पणी
१६. दैनिक चिन्तन डायरी	मनन योग्य, ३६६ दिनों में उत्तमोपदेश पठन
१७. आध्यात्मिक नीति निबन्ध	शिक्षाप्रद, विविध नैतिक लेख पत्र
१८. स्वयं सिद्ध श्री राम नवस्तोत्र	मानस कामना सिद्ध, नित्य पाठ
१९. देवीदान सुगम उपचार दर्शन	औषधि कल्पतरू
२०. रत्नमाल चिन्तामणि (प्रथम भाग)	छः सौ प्रश्नोत्तर, उपदेश दोहा
२१. रामायण मन्त्र उपासना	रामायण की सिद्ध चौपाईयाँ
२२. एक लाख वर्ष का पत्राकार कैलेण्डर	ईसवी सन्, मास, तारीख, वार
२३. उत्तम बाल योग रत्नावली	कर्म, स्वर, ज्योतिष का योग
२४. स्वाध्याय वेदान्त दर्शन	सारूक्तावलि, विचारमाला, विचारचन्द्रोदय, मूल पाठ संग्रह
२५. सुगम चिकित्सा (प्रथम भाग)	स्वामी अचलरामजी द्वारा संकलन
२६. सुगम चिकित्सा (द्वितीय भाग)	स्त्री-पुरुष गुप्त रोगों पर इलाज
२७. उत्तमराम अनुभव प्रकाश	३२१ भजन, वेदान्त
२८. उपासना का अनावरण	१२५ प्रश्न, रामदेव गप्प दर्शन
२९. उत्तम बाल ज्योतिष दोहावलि	परिवर्द्धित संस्करण ७५० दोहे एवं कई चार्ट
३०. तिलक प्रबोध दर्शन	श्री तिलक, जाति एवं भजन, तीन भाग

सम्पर्क करें :- **उत्तम आश्रम**, कागा मार्ग, जोधपुर-३४२००६

अपने शहर के प्रसिद्ध पुस्तक विक्रेता से खरीदें या डाक से [illegible]

Scanned with Cam